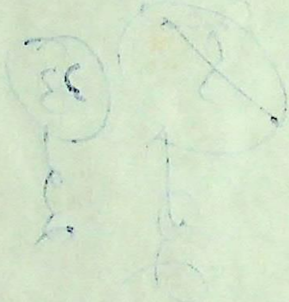


शाम साहिल

Donated
by
B.N. [illegible]
Gen: Secty
16.5-83



नज़राना

शाम 'साहिल'

गुलाब प्रकाशन मण्डल, जम्मू

NAZRANA

A Composition of Poems

by

Sham 'Sahil'

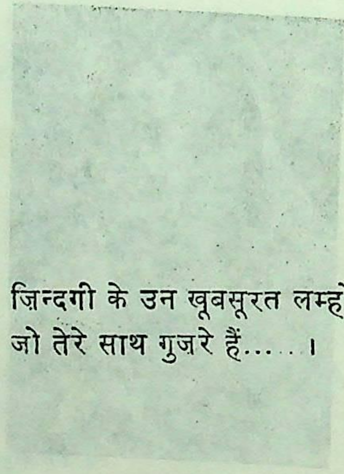
प्रकाशक : गुलाब प्रकाशण मण्डल, पक्का डंगा, जम्मू ।
पहली बार : 600, जुलाई 1980।
कीमत : 14 रु०।
मुस्सविर : विजय 'मस्त'

COLOR PRINTERS, GALI DARUGIRAN, KANAK MANDI, JAMMU. Ph. 7201



अपनी गुरु मां......
स्वर्गीय श्रीमति "सपना माला" जी के नाम...
जिनके आशीरवाद से मैं आज इस मुकाम
तक पहुंच पाया हूँ.. ...।

'साहिल'



ज़िन्दगी के उन खूबसूरत लम्हों को......
जो तेरे साथ गुजरे हैं......।

'साहिल'

विशे—सूचि

पहला नज़राना

इस से पहले कि मैं नाज़रीन की खिदमत में जनाब शाम 'साहिल' के मजमुआ - ए - कलाम 'नज़राना' के बारे में कुछ अर्ज़ करूं, यह कहना ज़रूरी समझता हूं कि शाम 'साहिल' दर हक़ीक़त शाम 'साहिल' न थे, आप शाम 'महरूम' के नाम से अपने दोस्तों और रफ़ीक़ों में जाने जाते थे। शाम 'साहिल' के दिल में मुद्दत से शेरी चिंगारी सुलग रही थी, लेकिन मुनासिब माहौल न मिलने की वजह से वो चिंगारी शोला की सूरत इख़्तियार न कर पाई थी। चुनांचे, आप ने अपनी शेरी और अदबी सलाहितों को अदब दोस्तों और अदब नवाज़ों तक पहुंचाने की कोशिश में 12 दिसम्बर 1976 के मुबारिक़ दिन 'अखिल भारतीय साहित्य सदन, रजि०, जम्मू में कदम रखा। उस दिन सदन की अदबी महफ़िल की सदारत जनाब विजय सुमन 'सोसन' कर रहे थे।

पहले ही दिन आप ने तआरुफ़ के दौरान कहा कि मैं आपके प्रोग्राम और अदबी निशस्तों के बारे में काफ़ी देर से सुन रहा था और मेरी दिली तमन्ना थी कि मैं भी इन अदबी महफ़िलों में शरीक हुं, चुनांचे, मेरी तमन्ना के मुताबिक आज मुझे यह मौका नसीब हुआ।

शाम महरूम ने महफ़िल में कई शेर सुनाए जिन में कुछ पुख़्ता थे और कुछ ना - पुख़्ता। और इसी लिए मैंने कहा था— 'बहरहाल आप रियाज़ जारी रखें और अनक़रीब ही बढ़िया शेर कहने के कबिल हो जाएँ गे।' इस बात की ताईद आंजहानी मोहतरमा सपन माला जी ने भी की थी।

13 मार्च 1977 को पंजाबी - अदबी संगम, जम्मू की पंद्रह रोज़ा अदबी बैठक, जिस की सदारत जनाब चमन लाल 'जोश' ने की थी, में मोहतरमा सपन माला ने एक ख़ुसूसी राय पेश की, कि शाम महरूम ने गुजशता 12 अदबी बैठकों में जिस क़द्र अपनी तख़लीक़ात सुनाईं, उन में महरूमियत, नाकामी और वहशत के सिवा कुछ नज़र न आया, अलबत्ता इस ने पहले की निस्बत काफी जानदार शेर कहे और सुनाए हैं। क्यों न हम मिल कर शाम 'महरूम' से गुज़ारिश करें कि वो अपना यह तख़लस (महरूम) तर्क कर दें।"

बैठक में मौजूद सभी 23 क़लमकारों ने इस बात की ताईद कर दी और मैंने फ़ौरन ही इन के लिए 'महरूम' की जगह 'साहिल' तजवीज़ किया जिस की ताईद आंजहानी मोहतरमा सपन माला और जनाब विजय सुमन 'सोसन' और जनाब-ए-'जोश' ने की और सदर-ए-महफिल 'जोश' साहब ने शाम सुन्दर को शाम 'साहिल' के नाम से पुकारा और मौज़ू तख़लुस कबूलने पर मुबारिक बाद दी।

इस के बाद शाम 'साहिल' ने किनारे लग कर खूब पढ़ना और लिखना शुरू कर दिया। देखते ही देखते इन की महरूमियां और नाकामियां नौ-दो-ग्यारह हो गईं। और 17 मई 1977 को एक अदबी बैठक जो जनाब साधू सिंह 'स्नेही' की सदारत में हो रही थी, में जनाब शाम 'साहिल' ने जो कलाम पेश किया उस का एक

नमूना मुलाहिज़ा कीजिए :—

जो मिट गया अमर हुआ, जो जिन्दा रहा रुसवा हुआ,
इश्क़ के परवानों की, इतनी ही बस कहानी है।

एक जुलाई 1977 को अखिल भारतीय साहित्य सदन, जम्मू व पंजाबी अदबी संगम, जम्मू की खसूसी बैठक में, व्यास पूजा के दिन का प्रोग्राम बड़ी शान-ओ-शौकत के साथ तकमील पज़ीर हुआ। इस में 44 शायरों और अदीबों, अदब दोस्तों और नये लिखारियों ने शिरकत की थी। आंजहानी मोहतरमा सपन माला ने बा-ज़ाब्ता तौर पर लखनवी रस्म के तहत चन्द एक नये लिखारियों को अपनी शागिर्दी में ले लिया, जिन में शाम 'साहिल' भी थे। लेकिन यह बदकिस्मती की बात है कि इस तकरीब के सिर्फ सात माह और 21 दिन बाद तक मोहतरमा सपन माला जिन्दा रहीं और इस अरसा में वो कोई तीन माह तक बिस्तर पर पड़ी रहीं। गोया 'साहिल' साहब को उन के नेक और अदबी मशविरे सिर्फ़ 141 दिन के लिए ही मुयस्सर हो सके। लेकिन यह उस अज़ीम शख्सियत की दिली दुआओं से, महफिले-अदब में अपनी जगह बनाने में बहुत हद तक कामयाब हो गये हैं और अपनी गुरु मां का नाम रोशन कर रहे हैं।

तरक्की की तरफ बढ़ते हुए भी 'साहिल' ने 30 एप्रल 1978 को हमें महफिल में एक सादा मगर खूबसूरत शेर सुनाया जो मैं हदिया-ए-नाज़रीन करता हूं :—

तुम भी क्या गिला करो, हम भी क्या शिकवा करें,
मोहब्बत भी मुकद्दर से, किसी-किसी को मिलती है।

जुलाई 1978 तक जनाब - ए - 'साहिल' ने काफी सारी नज़में कहीं, जिन में कई एक बहुत ही भावपूर्ण और माने - खे़ज थीं और एक दिन भरी महफिल में यह कहना ही पड़ा कि एक दिन शाम 'साहिल' एक अच्छे नज़्म गो शायर होंगे। जुलाई 1979 को शाम साहिल ने एक पुर - लुत्फ कत्ता सुना कर कई बहीख्वाहों और दोस्तों को लुत्फ - अन्दोज़ किया :—

यह चांदनी रात और तेरी यादों की कसक,
मुझ से न पूछ तेरा हाल क्या है।
तेरे ख्याल तक ही जब ग़ैर हो गये,
फिर ज़िंदगी या मौत का सवाल क्या है।

शाम 'साहिल' के मजमुआ-ए-कलाम 'नज़राना' का मुतालया करने के बाद आप मेरी राय से इतफाक करें गे कि यह एक ही मजमून को दर्जनों रंगों में पेश करने की हद दर्जा सलाहियत रखते हैं। इन की बाज़ कविताओं में कहीं - कहीं ऐसा भी लगता है कि शायद पहले किसी वाक्या की फोटोग्राफी ली है और बाद में उस वाक्या को नज़्म के सांचे में डाल दिया है। मुझे याद है कि एक बार 'महकती शाम' के अनुवान से शाम 'साहिल' ने एक खूबसूरत कविता सुनाई थी, जिस का एक शेर यूं था :—

यह लोगों का हजूम और महकती हुई शाम,
मेरी नजर किसे ढूंढ कर लौट आई है।
किस के सीने से जा लिपटे हैं जज़बात मेरे,
किस के सुर्ख होठों का दिल तमन्नाई है।

शाम 'साहिल' पहले पहल मुतालया करने से आर करते थे

लेकिन अब ऐसी बात नहीं है। आगे बढ़ने के लिए, दूसरे बुज़ुर्गों, साथियों और रफ़ीक़ों से बहुत कुछ हासिल करने के लिए, इन्होंने यह तरीका तर्क कर दिया है। कहीं-कहीं इनकी शायरी काफी बुलन्दी पर पहुंची हुई मालूम पड़ती है। मुसलसल रियाज़ इसकी ज़मानत थी। कितना सादा और प्यारा शेर कह कर शाम साहिल ने हमारे दिलों में धर कर लिया है :—

एक दिन इस तरह खो जाएंगे,
जिस तरह शाम के साएं ढलते हैं।

एक और शेर जो हमारी महफिल को प्यारा लगा है यूं है :—

"हम कोई इतिहास नहीं, जो कल दोहराए जाएंगे,
इक याद रह जाती है, वो भी कभी जो आएगी।

शाम 'साहिल' ने ज्यादातर लम्भी बहर में नज्में कही हैं। कई गज़लें भी लिखी हैं। यह हमेशा इसी कोशिश में रहते हैं कि मुरस्सा कलाम पेश किया जाए। पहला शेरी मजमुआ जो आज "नज़राना" बना कर अदबी दुनिया में पेश कर रहे हैं वाकई इनकी हलीमी और इन्कसारी की दलील है, लिहाजा इसको कबूल करना हर अदब दोस्त के लिए लाज़मी है। बसूरते दीगर इनके जज़बात और एहसासात और गौर-ओ-फिक्र पर उल्टा असर पड़ने का एहतमाल होगा। चूंकि शाम 'साहिल' खुद कौल-ओ-फेल के पक्के हैं इसलिए दुसरों को भी इसी तरह देखना चाहते हैं। इनका शेरी-फन अगर पूरे अरुज़ पर नहीं पहुंचा है मगर उसकी तरफ देख ज़रूर रहा है। नज्म "ग़द्दार" निहायत ही इन्साफ से लिखी गई है। नज्म किसी मुअरक़ा या हादिसा या वाक्या की अकास ज़रूर है।

दबे अलफाज़ में अपने दिल की अमीक़ गहराइयों की बात

किस ढंग से शाम 'साहिल' ने कही है, आप भी ग़ौर कीजिए :—

तेरे बग़ैर आज भी जी रहे हैं मगर,
ज़िन्दगी अब वो दिलकश साज़ नहीं।
तेरी गलियों में सब कुछ वही है लेकिन,
मुझे पुकारती हुई तेरी आवाज़ नहीं॥

अपनी लापरवाही और सख्त रवी का इज़हार करने के लिए शाम 'साहिल' ने जो शेर कहा है, वो काबिले-रश्क़ है :—

खुद ही देते रहे हैं, शोलों को हवा हम,
दामन से लगी आग तो, हम से बुझाई न गई।

वफ़ादारी का दम भरने के लिऐ एक जगह शाम 'साहिल' लिखते हैं :—

तड़पे कभी तेरी याद में, कभी होश गुम होते रहे,
कितनी ही बार ज़िन्दगी, तेरे कदमों से उठाई है।

शाम 'साहिल' के ख़त-ओ-ख़ाल, कद-ओ-कामत और नक्श-ओ-जसामत ऐसे ही हैं जैसे किसी वाहिद शख्स के होने चाहिऐ। इसी तरह इनकी शायरी भी अलग रंग की है और सोच अलग ढंग की। यह एक बड़ी खूबी है, जो एक शायर या अदीब में होनी चाहिऐ। जुदागाना चलन और जुदागाना फिक्रो-नज़र किरदार की खूबी कहलाते हैं और यह तमाम बातें शाम 'साहिल' और उसकी शायरी में मौजूद हैं। जब नाज़रीन इस किताब को देखेंगे तो मेरे तासुरात की दाद ज़रूर देंगे, यह मेरा यकीन है।

शाम 'साहिल' की शायरी कौसे-कज़ह के रंगों की तरह है। एक - एक मज़मून कितने हसीन पैराओं में बांधा गया है, यह इन का ही हिस्सा है। नज़्म गोई और ग़ज़ल गोई जुदागाना शेरी चलन

हैं। शाम 'साहिल' ज़्यादातर नज़्म गो शायर हैं। सुलझे हुए ख़यालात को सुलझे हुए अशआर में डालने की कोशिश किया करते हैं और दूसरों से भी यही उम्मीद रखते हैं। इन की कोशिशें कहां तक कामयाब होंगी, यह तो ज़माना ही बताए गा।

हद दर्जा प्यार का ज़िक्र करना कुछ जचता नहीं। हां, अगर किसी खास तरकीब का सहारा ले कर मोहब्बत का इज़हार किया जाए तो अच्छा लगता है। 'शाम 'साहिल' इस सिलसिले में कहते हैं :—

एक लम्हा भी न गुज़रा, तेरी याद से खाली कभी,
ज़िन्दगी भर तेरा ही बस, कर्ज हम चुकाते रहे।

जनाब शाम 'साहिल' की ज़ुबान हिन्दी है लेकिन शेर उर्दू और हिन्दोस्तानी में कहते हैं। हिन्दी ज़ुबान में उर्दू हरूफ और अलफाज़ के लिए अलग - अलग हरूफ मुयस्सर नहीं, इस लिए हो सकता है नाज़रीन को कहीं - कहीं सुकम सा नज़र आए। लेकिन यह सुकम या गल्ती नहीं होगी, बलिक उर्दू को देवनागरी में लिखने की ज़्यादती की बात होगी। शाम 'साहिल' की शायरी में अगर कोई कता - ओ - बुरीद नज़र आए तो यह घबराने वाली बात न हो गी, क्यों कि इस मन्ज़िल को पाने के लिए कई मन्ज़िलें तय करनी पड़ती हैं। और हां, अगर नाज़रीन को 'नज़राना' में कोई ग़ैर मानूस तरकीब नज़र आए तो शाम 'साहिल' को चाहिए कि उस तरकीब को एक हज़ार एक बार दोहराए और ग़ैर दानिश मन्दी का शिकार न हो।

शाम 'साहिल' आज महरूम होने के साथ - साथ मुमकिन था गुमनामियों के अन्धेरों में ही खोए होते—न अदबी महफिलों में

इन्हें जाना जाता न रेडियो स्टेशन पे नमूदार होते, न ही मुशायरों में पढ़ते और न ही अखबारों में इस कदर छपते, मगर ज़िन्दाबाद वो शख्सियत जिन की सलाहितों से यह मानूस हो उठे। ज़िन्दाबाद वो अदबी महफिलें जिन की वदौलत शाम महरूम अपने साहिल - ए - मुराद तक पहुंच पाए और आज रियासत के बाहिर और लाहौर पाकिस्तान में भी मशहूर हो रहे हैं। आप इन दिनों संगम और सदन के खाज़न हैं।

मेरी दुआ है कि शाम 'साहिल' का 'नज़राना' हर अदबी माहोल, अदबी महफिल और हर खास - ओ - आम में मकबूल हो और परमात्मा इन को सलामती बख्शे ताकि यह अदबी सरमाया में और सरमाया जोड़ सकें—आमीन।

निसार देहलवी

प्रधान अखिल भारतीय साहित्य सदन, जम्मू।

22-7-80 प्रधान सपन माला मैमोरियल कमेटी, जम्मू।

सरपरस्त पंजाबी अदबी सगम, जम्मू।

यह 'साहिल'

नज़राना शाम 'साहिल' की नज़्मों गीतों-व-गज़लों का पहला कावया संग्रह है। नज़्म लिखने पर तो 'साहिल' साहब को पूरा-पूरा अाभूर हासिल है! अक्सर इन की लिखी कविताऐं मुकामी-व-बैरुनी अखबारात में भी छप चुकी हैं। इन के लिखने के रंग में आप को रुमानवी रग ढंग ज़्यादा शगुफ़ता और खिला हुआ मिले गा! 'साहिल' साहब हमारी दोनों महफ़िलों के एक उभरते हुए जवांसाल सितारे हैं! यह अक्सर अपनी जज़्वाती नज़्मों की वजह से महफ़िल पे छा जाते हैं! इन की नज़्म का एक शेर देखिए :-

मैं अगर 'साहिल' हुं तो क्या हुआ,
तुम भी हो [redacted] कहीं भी बह सकती हो।
आज तुम्हारी ज़ुबां पे मेरी चाहत के ताले नहीं,
आज मेरी 'महबुब' तुम कुछ भी कह सकती हो

यूं तो हिन्दोस्तां एक बहुत बड़ा मुल्क है, जिस में हजारों शायर अपने-अपने ढंग से लिखने बैठे हैं मगर 'साहिल' साहब के लिखने का अपना ही निराला रंग है जो पढ़ने-सुनने वाले के दिलो-दिमाग पे अपनी पूरी छाप छोड़ देता है! ईशवर से प्रार्थी हैं कि 'साहलि' साहब का यह पहला कावया संग्रह शोहरत हासिल करता हुआ हाथों हाथ चलता जाए और इन्हें हर सू दाद मिलती रहे।

20 जुलाई 1980 **मोहन लाल "महाजन"**

सरंक्षक : अखिल भारतीय साहित्य सदन, जम्मू
पंजाबी अदबी संगम, जम्मू

कामयाबी के 'साहिल' पर

अदब के इस वसीह समन्दर में कामयाबी के साथ शाम 'साहिल' को अपनी कश्ती उतारते देख कर 'जामी' का एक शेर याद आता है—

दिला मनशीं दर
ई वीरान चूं चुगद।
सूए-मुर्ग़ानि-कुदसी
आशियां बर ।।

गोया अब 'साहिल' सब से ऊंचे आसमान पर परवाज़ भरने की त्यारी में हैं। हम दोनों को एक ही गुरु मां (स्वर्गीय श्रीमति सपन माला) का आशीरवाद मिला है, इस नाते मुझे बड़ी खुशी है और मैं सिर्फ इतना ही कह कर बात ख़त्म करती हूं—

तेज तर्रे गामजन,
मन्ज़ले-मा दूर नेस्त।

शकुन्त 'दीपमाला'
प्रधान
पंजाबी अदबी संगम, जम्मू।

9-7-80

अदबी नज़राना

कितनी निगाहें देखती रहीं 'साहिल' की तरफ,
वो डूब गये जिन को साहिल न मिला।

शाम 'साहिल' की शायरी के बारे में मैं यह ठीक ही कह रही हूं। शाम 'साहिल' की हर लाइन का अर्थ बहुत गहरा है। प्रतिभाशाली, स्वच्छन्द प्रकृति के शायर शाम 'साहिल' की 'नज़राना' पुस्तक इन का पहला काव्य-संग्रह है। 'नज़राना' मानव मन की अथाह सम्वेदना का चित्रन है। अदब के दरिया का साहिल, सागर तल से भी गहरा है। शाम के मन में दर्द का दरिया बह रहा है— और अलबेला 'साहिल' दरिया के दर्दीले थपेड़े सहता मजबूर हो लिखता है—

मेरी आख़िरी सांस तक है मेरा फ़साना,
कौन कल को मेरे गीत गाए गा।

जवानी की उम्र में ही शाम 'साहिल' ने जीवन की लघुता को जान लिया है—

कल तुम भी न शायद आ सको,
कल हम भी न शायद मिल सकें।
ज़िन्दगी की लय पे थिरकते जिस्म
बहुत मुमकिन है कल न हिल सकें।

ग्रात्म संघर्ष ग्रौर छटपटाहट ही शाम 'साहिल' की शायरी का सार है—

कब्रों को हो उखाड़ दो हर सू छाई बरबादियो,
इस उजड़े हुए शहर में, किस को हम सदा देंगे।

'साहिल' ग्रागे कहते हैं—

दम भर ठहरे भी नहीं, हम को तन्हा छोड़ कर,
तेरी यादों के साए यह, जाने कहां तक जाऍं गे।

'साहिल' ने सच्ची मोहब्बत ग्रौर दिल के पाक रिश्तों को बहुत महत्व दिया है—

महलों से भी ऊंचे होते हैं,
जो दिलों के रिश्ते बनते हैं।
मौत भी क्या तोड़ें गी इन्हें,
बस चेहरों के रूप बदलते हैं।

शाम 'साहिल' की शायरी में ताजे घाब की सी पीड़ा है। इन के शेरों की ग्रनूठी कोमलता ग्रौर ताज़गी पाठक ग्रौर श्रोता को सहज में ही लुभा लेती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन की पुस्तक 'नज़राना' ग्रदब के हर प्रेमी की प्रेयसी होगी ग्रौर समकालीन साहित्य क्षेत्र में विशेष स्थान प्राप्त करे गी। वक्त के साथ-साथ शाम 'साहिल' के भीतर छुपा महान शायर ग्रौर उभरे गा......ग्रौर उभरे गा......।

सरोज वर्मा 'मुक्तमाला'
17-7-80 696, 11-बी चन्डीगढ़

मेरी राहें

वक्त की ख़लाओं में कहीं ठोकर खा कर,
तुम्हारे बग़ैर हयात जाने कहां गिर जाए गी।
तुम जो हमसफ़र बनती तो बात और थी,
ज़िन्दगी तो कैसे भी अब गुज़र जाए गी।

चन्द रिश्तों पे उम्र भर का हक़ होता है,
क्यों कहा करती हो मेरा हक़ नहीं तुम पर।
तुम्हीं तो मेरे गर्म सांसों की हरारत हो,
कौन मेरे करीब होगा इस से बढ़ कर!

यह मेरी राहें जो तुम तक आती हैं,
मैं जानता हूं कल कहीं और मुड़ जाएें गी।
मेरी आरज़ूएें जिन्हें तुमने खलल समझा है,
कल पंख लगा कर जाने कहां उड़ जाएें गी!

लेकिन फिर भी दिल के किसी कोने में,
खुदा से पहले तुम्हारी ही इबादत होगी।
कल किसी मोड़ पे मिल जाओ तो देख लेना,
इस दिल में कल भी तुम्हारी चाहत होगी!

□

यादों के साए

जिन्दगी के इस नये मोड़ पे सोचता हूं,
जहां से गुजरा हूं अब वो राहें हैं कहां।
जो लिपट सकी न मुझसे इक बार भी,
शर्म से लिपटी हुई तेरी वो बाहें हैं कहां !

हवा ले आती है जिन्हें तेरी निगाहों से,
सुबहो-शाम उन्हीं अश्कों को पी रहा हूं मैं।
किसी और के पहलू में रह के आज भी,
तेरी यादों के साए में जी रहा हूं मैं !

वो चांदनी रात और छत पे हम दोनों,
वो गेसू खोल कर तेरा मेरे रुबरु आना।
वो शरारत से मुस्कराते सुर्ख होंठ,
वो बातों का लब पे आके रुक जाना !

इन्ही यादों के दायरे से शायद मैं कभी,
चाहूं भी तो खुद निकल न पाऊंगा।
यह जिन्दगी जो किसी और की अमानत है,
तेरी इन्ही यादों में गुजार जाऊंगा !

□

ज़िन्दगी

इस चार दिन के सफर - ए - हयात में,
जीना सब के लिऐ दिलकश साज़ नहीं होता।
तुम किस लिऐ बनाते हो खयालों के महल,
एक लम्हा भी ज़िन्दगी का दमसाज़ नहीं होता !

एक पलड़े पे रखे हुऐ कहीं मौत को,
ज़िन्दगी सांसों के तराज़ू पे तुला करती है।
इतने हसीं और खौफ़ज़दा हैं इस के मन्ज़र,
जैसे कि रूह कोई ख्वाब देखा करती है !

अपनी हस्ती पे इन्सां इतना गरुर न कर,
हम मिट्टी के खिलोनों की अहमियत क्या है।
हम में दम कहां कि खुदाई को बदल डालें,
तुफ़ां के आगे शम्मा की हैसियत क्या है !

बड़ी नाकाम सी है ज़िन्दगी इस दुनिया में,
बेशुमार हसरतों में इस का गुज़ारा कहां होगा।
चलो किसी और जहां की अब्र तमन्ना करें,
इस जहां से आगे भी कोई जहां होगा !

□

तेरे आने पर

तेरे आने पर मेरी 'महबूब' जी चाहता है,
इस ज़मीं को सितारों की ज़मीं बना डालूं।
कहकशां भी तेरे पांव जला न सके,
हज़ारों फूल तेरी राहों में बिछा डालूं !

हूरों को बुलाऊं तेरे गैसु संवारें आकर,
चांदनी से कहूं तेरा हुस्न निखार जाए आज।
सब शगुफ़े तुझे अपना तब्बसुम बख़्श डालें,
सारी कायनात तेरे कदमों में चली आए आज !

अपनी इज्जत के लिए क्यों मायूस रहे तू,
तेरी शोहरत को चांद तारों तक पहुंचा सकता हूं।
तु किसी और के करम की मोहताज क्यों बने,
मैं शायर हूं, तुझे खुदा बना सकता हूं !

इन तमाम आरजूओं के बावजूद भी, लेकिन,
मुझे हक़ नहीं तेरा हाथ भी छू सकूं।
दुनिया या दुनिया वाले कुछ भी कहें, मगर,
मेरी महबूब बता यह सच है कि नहीं !

□

क्या पेश करूं

नया साल नये दिन ले के आया है,
और में सोचता हूं तुम्हें क्या पेश करूं।
दिल खो चुका है तुम्हारी जुस्तजू में कहीं,
आरज़ूएं भी इस मुकाम तक ज़िन्दा न रहीं।

निगाहें डूब चुकीं इन्तज़ार के समन्दर में,
फूलों की जगह ख़ार हैं मेरी राहगुज़र में।
दिल की धड़कनों का यूं साज़ बजता है,
जैसे लड़खड़ाते कदमों से कोई चलता है।

चाहत से मेरी पहले ही परेशां हो तुम,
मेरी हस्ती पे भी नहीं मेहरबां हो तुम।
मेरी हमदम, यह सब वक्त के तक़ाजे हैं,
जिन्हें समझना चाहो तो समझ सकती हो।

आज गुजशता साल की तरह कोई बात नहीं,
और कल जब फिर नया साल आएगा।
मेरी हस्ती, चाहत, कुछ न रह जाएगा,
यह दुनिया है, यहां यूं ही होता है।

खैर, छोड़ो, जजबात की इसी कशमकश में.
नया साल, नये दिन ले के आया है,
और मैं सोचता हूं. तुम्हें क्या पेश करूं।

□

आपके पहलू में अब वो लम्हें कहां,
आज वो मोहब्बत, वो चाहत, वो आरज़ू नहीं,
अब यह राज - राज रखने से क्या हासिल,
आपकी निगाहों को मेरी जुस्तज़ू नहीं !

वक्त

ज़िन्दगी खुदा से बखशीश में ले कर,
हम वक्त की आगोश में पला करते हैं।
वक्त वह शम्मा नहीं, जिसे बुझा दे कोई,
वक्त के चराग़ आंधियों में जला करते हैं ।।

यह वक्त के हाथों में लुटे हुए चेहरे,
यह वक्त के पांव से मसली हुई तकदीरें।
मुकद्दर भी शायद इन्हे खोल नहीं सकता,
यह वक्त की बांधी हुई पांव में जंजीरें ।।

हवा भी चले तो वक्त से पूछ कर,
कौन कहता है वक्त का वो ग़ुलाम नहीं।
यह दुनिया सिमटी हुई है वक्त की बाहों में,
वक्त के बाद किसी और का नाम नहीं ।।

मैंने वक्त को बदलना चाहा था इस तरह,
जैसे किसी ने सहरा में पानी की जुस्तजू की हो।
या गुरबत के ख़ारों पे सोए किसी ग़रीब ने,
मखमली बिस्तर पे सोने की आरज़ू की हो ।।

वक्त किसी के आगे झुक नहीं सकता,
मेरी या तुम्हारी खातिर रुक नहीं सकता।
बदलें कितने भी दौर, चलें कितनी आंधियां,
बना न सकेगा कोई, वक्त को अपना आशियां॥

वक्त दुनिया का खुदा, वक्त मौत और ज़िन्दगी,
वक्त ही मुकद्दर है, वक्त प्यार और बन्दगी।
वक्त के साथ - साथ जो चला नहीं करते,
बुलन्दियों के दामन को छुआ नहीं करते॥

वक्त के बनाए हुए कल जो शाह थे,
वक्त की बदौलत आज हर इक के मोहताज हैं।
इसलिए वक्त गंवा कर न वक्त की तौहीन करो,
वक्त के साथ चल कर वक्त के पाबन्द रहो॥
वक्त मिटा सकता है तुम्हें, वक्त से हमेशां डरो!

□

शबाब

तुम्हारे रुखसारों पे यह हया की लाली,
दुनिया भर के फूलों का शबाब हो जैसे।
इन होठों पे महकती हुई यह आरजू,
हुस्नो - इशक़ की खुली किताब हो जैसे!

यह हुस्न, यह जवानी, यह अंगडाइयों के तुफ़ान,
तुम जिसे भी चाहो मिटा सकती हो आज।
आज तुम्हारे हाथों में सब का मुकद्दर है,
चांद - तारों को भी झुका सकती हो आज!

यह संगे-मर-मर सा बदन, यह दिलकश अदाएं,
कौन कहता है जन्नत मैंने देखी नही।
तुम्हे देख कर तो वक्त भी ठहर जाए,
लौट जांऐ बिजलियां फ़लक-पे फिर वहीं!

तुम्हारे शानों पे लहराते हुए यह गेसू,
कितनी हसरतों को दिल में उठा देते हैं।
तुम्हारी ज़ुल्फ़ों के यह बल खाते हुए मोड़,
कारवां को भी मन्ज़िल से बुला लेते हैं!

यह अंदाज़े - गुफ़तगू, यह आवाज़ का जादू,
तुम्हे क्या ख़बर किस पे क्या गुज़रती है।
हर पहलू में दिल धड़कने लगता है,
तुम्हारे तब्बसुम से कायनात जब संवरती है!

नज़र भर के न देखो इस तरह,
मर गये तो बदनाम तक़दीर होगी।
जिन्दगी तो जिऐगा अब वही नामुराद,
जिस के माथे पे तुम्हारी तहरीर होगी!

□

हक़

किस का हक़ हैं......

यह होठों के प्याले—यह आंखों के सागर,
यह माथे की बिंदिया—यह ज़ुल्फ़ों के बादल।

यह गजरों का खनकना—यह पायल का बजना,
यह सांसों का रुकना—यह सांसों का चलना।

यह गैसू, यह आंचल—यह जोड़े की सुर्खी,
यह तब्बसुम, यह हया—यह निगाहों की शोखी।

यह आंखों के ख़्वाब—यह आंखों के जाम,
यह आंखों की मय—यह आंखों के प्याम।

यह सजना - संवरना—यह राहों का तकना,
यह होठों पे आ के—बातों का रुकना।

यह सांसों की महक—यह चेहरे का नूर,
यह हाथों की मैंहदी—यह मांग का सिन्दूर।

मेरा हक हैं, न यह हैं मेरे लिए,
इन ख़्यालों से भी मैं बहुत दूर हूं।

यह हक तू ने औरों को बख़्शे हुए हैं.
मैं तो ग़ैरों में था—और ग़ैरों में हूं ।

मेरा हक़ हैं—न यह हैं मेरे लिए,
मैं तो ग़ैरों में था—और ग़ैरों में हूं ।

□

फूलों को बिखर जाने का शोक़ होता है,
तेरे पांव जब भी जमीं पे चलते हैं,
उस एक आवाज़ पे दिलों का झूम जाना,
सभी साज जैसे तेरी पाज़ेब से निकलते हैं !

गुज़शता साल

नये साल के इस मौके पे मेरी हमनशीं,
तुम्हारी हसरतों को मैंने दुआएं बख्शी हैं।
उन आरज़ुओं को इक नया मोड़ दिया है,
जो कब से नाकाम हो कर तुम्हे तकती हैं।।

न अब तुम्हारी राहों में कोई आए गा,
न तुम्हारे क़दम भी कहीं पे लड़खड़ाएं गे।
इन जज़बात के बारे में यह न सोचो अब,
गुजशता साल के आंचल में कहां सर छुपाएं गे।।

तुम भी तो कोई वक्त के खुदा नहीं,
जो मेरी नाकामियों को फिर से बदल सको।
या अपनी तमन्नाओं पे ख़ाक डाल कर तुम,
दिल से बगावत कर के मेरे साथ चल सको।।

फिर तुमसे मेरी हमनशीं उम्मीद क्या करना,
जिन्दगी तुम्हारे ही करम की मोहताज तो नहीं।
ग़ैर शाने पे भी सर झुका सकता हूं मैं,
पांव में तेरे हुस्न की जंजीरें आज तो नहीं।।

फूल भी महकते रहें तुम्हारे इस शबाब से,
मेरा दिल तुम्हें अब यही दुआएं देता है।
जफ़ा के आंचल में मुंह छुपाकर गुज़र जाओ,
अगले मोड़ से तुम्हे कोई और सदाएं देता हैं॥

□

सोने-चांदी के बिस्तर की आरज़ू करने वाली,
तेरी निगाहों में जज़बात की दौलत क्या है.
किसी का मुक़द्दर कोई छीन नहीं सकता.
यह न सोच तेरे बाद मेरी क़ीमत क्या है!

आखिरी सलाम

मेरी तरफ़ देख कर खामोश नज़रों से,
यह मैंहदी लगा हाथ जबीं तक न उठा।
तु गिर गई है मेरी नज़रों में अगर,
ज़माने की नज़रों में तो खुद को न गिरा।
यह रस्म निभाना कोई लाज़िम तो नहीं,
मेरी महबूब मुझे आख़िरी सलाम न कर॥

यह चन्द यादें जो छोड़ चली हो बाक़ी,
कौन से दामन में समेटूं गा इन्हें।
यह नज़रें जो तेरे गैसुओं में कैद थीं,
अब किस के बालों से लपेटूं गा इन्हें।
क़रीब आ कर मेरे पांव छूते हुए,
मेरी महबूब मुझे आख़िरी सलाम न कर॥

इस सुर्ख जोड़े मे छुपे अरमान मेरे,
तेरी निगहबानी में सलामत न रह सकें गे।
छोड़ कल के वादों को निभाने की बातें,
तेरे जलवे मेरी अमानत न रह सकें गे।

अपने दिल पे अब बोझ सा ले कर,
मेरी महबूब मुझे आख़िरी सलाम न कर ॥

भीगी आंखों से मुझे इस तरह न देख,
अब दौड़ कर लिपटने की आरज़ू कैसी ।
समझ लो कि धुन्ध में खो गया हूं मैं,
और धुन्ध में खोए हुओं की जुस्तजू कैसी ।
किसी भी आरज़ू के साथ मुड़ के पीछे,
मेरी महबूब मुझे आखिरी सलाम न कर ॥

□

फ़र्ज़

ए मेरे मुल्क़ के नौजवान साथियो,
अपने फ़र्ज़ का तुम जरा एहसास तो करो !

यह मुल्क़ जिसका बोझ तुम्हारे कान्धों पे है,
तुम्हारा फ़र्ज़ है कि इसे बुलन्दियों तलक ले जाओ,
कोई भी शै इसके मुक़ाबिल न हो सके,
चांद तारे भी इसके कदमों में ले आओ।

गुरबत की जंजीरें जो इसके पांव में हैं पड़ीं,
तुम्हे अपने इत्तिफ़ाक और जोश से तोड़नी होंगी,
मुफ़लसी की आग में सुलगते इन्सानों की ख़ातिर,
तुम्हे अपनी सब मसरुफ़ियात छोड़नी होंगी।

तुम्हे समाज की इन गिरी हुई दीवारों को,
पुख़्ता बुनियाद पे फिर से उठाना है,
इस मुल्क़ की आबरु बरक़रार रखते हुए,
आस्मां से बुलन्द नया हिन्दोस्तां बनाना है।

तुम ऐसा कोई भी काम न करो जिससे,
यह जमीं तुम्हारा बोझ भी न उठा सके,

ज़िन्दगी नफ़रत और तल्ख़ियों में ही गुज़र जाए,
और खुशी का एक लम्हा भी न करीब आ सके।

यह दंगे - फ़साद और यह इन्कलाब की बातें,
अपना घर जलाकर तमाशा देखने वाले न बनो,
तुम्हे दो कदम नहीं, अभी बहुत दूर चलना है,
इक दुसरे के पांव के दर्दनाक छाले न बनो।

कल इस मुल्क़ की जब तारीख़ लिखी जाएगी,
यह न हो तुम्हारा नाम भी न आए कहीं,
या लिखने वाले मुर्ख अलफ़ाज़ में लिखते रहें,
इस मुल्क़ के नौजवान किसी भी काबिल नहीं।

इस लिए इस तोहमत को न करीब आने दो,
अपना फर्ज़ निभाओ और दूसरों को निभाने दो।
तुम मुल्क़ की तकदीर हो यह न भूलो कभी,
तुम्हारी मेहनत से यह चमन और खिलना है अभी

अभी तो बिखरे बिखरे से जज़बात हैं,
शोलों को हवा देते हुए ख़यालात हैं।
अभी तुम्हारे वतन को तुम्हारे जोश की ज़रूरत है
अभी न बहको कि इसे तुम्हारे होश की ज़रूरत है,

अभी भी चन्द रस्मो-रिवाज बदले नहीं जा सके,
कुछ लोग अभी भी अपना हक़ नहीं पा सके।

अभी इस समाज में चन्द नासूर बाकी हैं,
आंखें खोल कर देखो तो खामियां काफ़ी हैं।

यह सब तुम्हारे मुल्क के नाम पर धब्बे हैं.
जो तुम्हें हर हाल में अब धोने होंगे।
इसलिए ए मेरे मुल्क के नोजबान साखियो,
अपने फ़र्ज का तुम जरा एहसास तो करो।

□

चलते - चलते

वो अचानक मुलाकात जब मिल गई थी तुम,
राह चलते सजी हुई किसी दुलहिन की तरह ।

सच मानो मैंने सोचा था कि शायद,
सितारों की तरह चांद भी आ गिरा है आज ।

क्योंकि बेहद हसीन लग रही थी तुम,
शायद तुम ने भी खुद को आइने में देखा हो ।

वो सुर्ख होंठ कैसे भुला सकता हूं मैं,
दहकते हुए देखे थे पहली बार मैंने ।

वो मुस्कराहट थी कि खिलते हुए गुलजार,
वो संवरे हुए गैसू वो रेशमी रुखसार ।

वो सीने को छुपाए हुए मरमरीं बाहें,
वो मखमली पांव चुभती हुई राहें ।

वो शोख निगाहों में मचलते हुए तूफां,
चमकते हुए आफताब के चेहरे पे निशां ।

वो बातें के जुबां से गिरते हुए फूल,
जिन्हें चुन रही थी हवा रफ्ता - रफ्ता ।

और बेखबर सी तुम जा रही थी,
वो जन्नत थी तुम या जन्नत की परी।
या सर्द रात की महकती चांदनी थी तुम।

बिलकुल उसी तरह संवरी हुई थी तुम,
जिस तरह ख़यालों में संवारा था तुम्हें।
या दूज के चांद पे मुस्कराते देख कर,
मैंने बाहें फैला कर उतारा था तुम्हें।

मेरे ख़यालों की तरह रहो हसीन तुम,
क्या हुआ जो नहीं हो मेरी तुम।

□

ताल्लुक़ात

क्या गिला यार करें तेरी भी ख़ता कैसी,
इस दौर में ताल्लुकात ही निभाए नहीं जाते ।

एक वो मोड़ जहां से मैं गुज़र आया,
एक यह मोड़ जहां पांव फ़िसल जाते हैं ।
क्या मोहब्बत कीजिए ज़माने से यहां,
लोग तो क्या यहां जज़्बात बदल जाने हैं ।

यह वो ग़म हैं जो उठाए नहीं जाते,
इस दौर में ताल्लुक़ात ही निभाए नहीं जाते ।

कफन ओढ़ के सोए मुर्दों को उठाओ तुम,
ताकि देखें कि मोहब्बत की हकीकत क्या है ।
जिस चाहत के लिए मर गए शान से वो,
आज दुनिया में उस की क़ीमत क्या है ।

अब्र वफ़ाओं के चराग जलाए नहीं जाते,
इस दौर में ताल्लुकात ही निभाए नहीं जाते ।

मेरी महबूब आज तुम न भी निभाओ तो,
कोई भी इल्ज़ाम तुम्हारे सर न जाए गा ।

दिली रिश्तों के जहां तकाज़े किए जाते हैं,
इस दौर में वो मुकाम नहीं आए गा।

यहां ग़ैरों के लिए अश्क बहाए नहीं जाते,
इस दौर में ताल्लुकात ही निभाए नहीं जाते।
क्या गिला यार करें तेरी भी ख़ता कैसी।।

□

आदत

लोग कहते हैं दिल्लगी करना तुम्हारी आदत है,
मोहब्बत करना तो मेरी महबूब आदत नही होती ।
तुम लाख सर झुकाओ दैर में जा कर,
इस के मुकाबिल तो कोई इबादत नहीं होती ।

मुझे देख कर किस लिए मुंह फेर लेती हो,
तुम्हारी नफ़रत मेरे जज़बात दबा नहीं सकती ।
मेरे मायूस दिल के लिए यही सहारा बहुत है,
चन्द गुज़रे हुए लम्हों को तुम भुला नहीं सकती ।

मैंने अपनी चाहत की आड़ ले कर,
तुम्हारे खूबसूरत बदन से दिल नहीं बहलाया था ।
अपनी मोहब्बत को खैर में बांटने वाली,
मैंने तुम्हारे सामने दामन तो नहीं फैलाया था ।

मेरी चाहत को ठुकरा के ऐसी बात भी नहीं,
तुम्हें मेरा ख़याल भी न आता होगा ।
कितनी यादें तुम्हारे ज़हन को जकड़ लेती होंगी,
जब तुम्हारे पहलू से कोई गुज़र जाता होगा ।

तुम्हारे करीब से गुजरता हूं इसी हसरत में,
कि शायद तुम रोक लो गी आवाज़ दे कर।
या दौड़ कर लिपट जाओ गी मेरी बाहों से,
तमाम रुसवाइयों को अपने सर ले कर।

लेकिन तुम्हारी नज़रों में यह बेकार सी ख्वाहिश है,
जो इक रोज़ यूं ही तबाह हो जाए गी।
तुम्हारी यह बेरुखी और खामोश रहने की आदत,
मेरी मौत के बाद भी न बदल पाए गी।

□

हमनशीं

मेरे बचपन की ए हमनशीं .....

क्या तुम्हें याद हैं बचपन के वो दिन,
बातों में हम दोनों मसरूफ़ रहते थे जब ।
दुनिया के सामने या दुनिया से बहुत दूर,
कितनी मासूम हरकतें किया करते थे जब ।

वो दोनों का रूठना और दोनों का मनाना,
वो शीशम के पेड़ों के नीचे मुलाकातें ।
वो फूलों की तरह मुस्कराते हुए दिन,
वो शबनम सी पाक और बेख्वाब सी रातें ।

गांव की उन छोटी-छोटी सी राहगुजारों पे,
सहर की धुन्ध में खो जाते थे हम जहां ।
वही धुन्ध हमें आज भी छुपा सकती है,
मेरी हमनशीं लेकिन, आज वो बातें हैं कहां ।

तुम भी उस मुक़ाम से बहुत दूर निकल आई,
मैं भी बिछुड़ कर बहुत दूर चला आया ।
और कलियों की तरह मासूम वचपन को,
मैंने वक्त की आग़ोश में सिसकते पाया ।

मुझे तो आज भी याद है मेरी हमनशीं,
एक बार हम ने चन्द हसीं ख्वाब सजाए थे।
कितने ख़यालों को परवाज़ दी थी हम ने,
कितने ही बेशुमार उम्मीदों के चराग़ जलाए थे।

लेकिन वक्त के इन्हीं झरोखों में कहीं,
वो मासूम ख़यालात फंस कर दम तोड़ बैठे।
और दुल्हन सी उन हसरतों को मिटा कर,
इक मोड़ पे हम दोनों भी साथ छोड़ बैठे।

फिर दिन युं ही गुज़रते रहे और हम,
दुनिया के झमेलों में जाने कहां खो गये।
यादें भी रफ़्ता-रफ़्ता दामन छुड़ाती गईं,
और इक तरह से फिर अजनबी हो गये।

और आज ज़िन्दगी के इस नये मोड़ पर,
हमारी यह अचानक मुलाकात तुफ़ां बन आई है।
कितने बदल गये हैं चेहरे वक्त की रफ़तार में,
इतने सालों बाद जब किस्मत करीब लाई है।

लेकिन आज उन ख़यालात या हसीन ख्वाबों की,
मेरी हमनशीं ! सोचें अगर तो क़ीमत क्या है।
आज तुम भी एक हद से आगे बढ़ नहीं सकती,
आज मेरी भी चाहत की हैसियत क्या है।

आज यह भी मुमकिन नहीं कि हम दोनों,
उसी अंदाज़ में बैठ कर फिर वही बातें करें।
इक दूसरे का हाथ पकड़ कर उसी तरह खेलें।
या उन्हीं पेड़ों के साए में फिर मुलाकातें करें।

इस लिए कैसे लिपट जाएं इक दूसरे से आज,
आज तुम्हारा दामन तक भी पा नहीं सकता।
वक्त के किसी भी मुक़ाम से पुकारते रहें लेकिन,
मेरी हमनशीं वो बचपन लौट कर आ नहीं सकता।

आज वो बचपन न सही फिर भी लेकिन,
हम उसके ख़यालों में खो तो सकते हैं।
आज जवानी पे लाख बंदिशें ही सही,
बचपन की यादों के साए में सो तो सकते हैं।

□

तुम चाहो तो

कौन कहता है जिन्दगी प्यार के साए में,
कोई चाहे तो मर्ज़ी से गुज़ार सकता है।
या पहलू में बैठ कर उम्र भर के लिए,
महबूब की ज़ुल्फ़ों को संवार सकता है।

मेरा हक है सिर्फ़ तुम्हारी चाहत पर,
तुम चाहो तो इन्कार भी कर सकती हो।
तुम्हारा हुस्न मेरा ग़ुलाम तो नहीं लेकिन,
तुम चाहो तो इक़रार भी कर सकती हो।

तुम्हें कोई मजबूरी हो तो कह देना मुझे,
मैं जानता हूं के जज़बात खरीदे नही जाते।
कितने हसीं क्यों न हों सहर के आलम,
चांद तारे फिर भी रोके नहीं जाते।

अभी मेरे हाथों में तुम्हारा हाथ नहीं आया,
अभी तुम्हारे ख़यालात बहके हैं न उलझे हैं।
अभी मुमकिन है कि मैं भी संभल जाऊं,
किसी हद तक ही मेरे जज़बात बिखरे हैं।

लेकिन दो चार क़दम और चलने के बाद,
मेरी महबूब लौट आना मुश्किल हो जाए गा।
ज़िन्दगी एक बेकार सा बोझ बन जाए गी,
और तुम्हारा यह शबाब उम्र भर रुलाए गा।

इस लिये जो भी चाहो जवाब दे सकती हो,
हर फ़ैसले का तुम्हें इख़तियार है मेरी दोस्त।
मेरा तुम पे कोई हक़ या बंदिश नहीं,
मुझे तो सिर्फ तुम से प्यार है मेरी दोस्त।

□

मैं देख सकूं न जब, तुझ को सुर्ख़ जोड़े में कभी,
छुपा के चेहरा आंचल में, गुज़र जाना मेरे करीब से।

आज और कल

आओ मना लें आज खुशियां,
कल किस ने देखा है।

कल तुम भी न शायद आ सको,
कल हम भी न शायद मिल सकें।
ज़िन्दगी की लय पे थिरकते जिस्म,
बहुत मुमकिन है कल न हिल सकें।

वक्त की इन दहशतज़दा खलाओं में,
क्या पता कौन कहां खो जाए गा।
हमारी तुम्हारी या उस की बात क्या,
क़यामत के दिन सारा जहां सो जाए गा।

इन निगाहों मे न अब तलख़ियां पैदा करो,
ज़िन्दगी वो शै नहीं जो बारहा मिलती है।
लाख मुश्कलें कायनात की सहने के बाद,
किसी जिस्म में तब कोई रुह ढलती है।

प्यार के जहां फूल और चाहत की हो खुशबू,
ज़िन्दगी को इक ऐसा आओ गुलज़ार बना डालें।

इन्सां को इन्सां से दूर करते हुए ख्यालात,
सदा के लिए आओ ज़हन से मिटा डालें।

यह ग़मों से निकलती हुई यास—.
यह मासूम चेहरे यह थकी-थकी सी आंख
यह दामन भिगोते हुये अश्कों के दरिया.
यह आहों की आग़ोश में पलते नासूर। .

भूल जाओ इन से कोई रिश्ता है तुम्हारा,
इन्हें किसी मोड़ पे अलविदा कह कर।
आओ मना लें आज खुशियां,
कल किस ने देखा है।

□

बहुत दूर तक जाते हैं, जिन्दगी के मोड़ यह,
वहीं मौत के साए हैं, जहां से जा कर पलटिए।

मुबारक

सारी कायनात तुझे मुबारक देने आई है,
मेरे दोस्त तेरी बाहों में आज खुदाई है।

हाथों में लगा रखी है फ़ज़ाओं ने मेंहदी,
तेरी शादी है या जन्नत का नज़ारा है।
यह हवाओं में दूर से आती हुई खुशबू,
तेरे ख्वाबों ने कहीं दुल्हन को संवारा है।

तेरे सेहरे की यह लड़ियां हों मुबारक़ तुझे,
खुदा करे तेरे चेहरे पे यही नूर रहे।
बहुत खूबसूरत हो कल भी तेरी दुनिया,
तु मेरे यार किसी आंख का ग़रूर रहे।

वक्त भर जाए गा खुशियों से तेरा दामन,
आस्मां से आज फूल बरस जाएँ गें।
चांद क्यों न आए गा सलाम करने को,
तेरी बारात में फरिशते भी चल के आएँ गे।

कल यह गुज़रते हुए लम्हात भूल जाओ गे,
कल उन्हीं से बेशुमार मोहब्बत होगी।

ओर ख्वाबों से परे दुनिया-ए-हक़ीक़त में,
रेशमी बालों में सिमटती हुई चाहत होगी।

सुर्ख जोड़े में जो लिपटे हुए आएँ गे,
तेरे हाथों में उनका नर्म हाथ रहे।
उन के रुख़सारों पे खेलती हुई बहार,
ज़िन्दगी भर खुदा करे तेरे साथ रहे।

□

यही तो है कमी के हम, यार इस क़ाबिल नहीं,
वरना ज़माने की उम्र, तुम्हें देते जो ख़ुदा होते।

क्यों कहूं

आज पहले से वो दिली तआलुक़ात कहां,
यह वक्ती जज़बात हैं, चाहत या मोहब्बत कैसी।
आज वक्त के तक़ाज़े कुछ और कहते हैं,
आज तुझ से मेरी दोस्त मेरी रफ़ाक़त कैसी।

तेरे बदन से खेलती हुई यह मेरी आंखें,
कल तुझ से भी जुदा हो जाएं गी।
और तेरे गैसुओं के साए से उठ कर,
कहीं और हमेशां के लिए खो जाएं गी।

अब कोई ख़्वाब नहीं जो मैं देखूं गा,
और फिर तेरे बाद रह भी क्या जाता है।
जीने को तो ख़ैर सभी जी लेते हैं,
सिर्फ़ वक्त हीं मुशकिल से गुज़र पाता है।

मेरे हसीं ख़्वाबों की उजड़ी हुई बस्ती,
पुकारे भी तुझे तो मुड़ कर न देखना।
मेरी बरबाद मोहब्बत का उठे जब जनाज़ा,
क़सम है तुझे इक लम्हा उधर न देखना।

मेरी महबूब, मेरी जवानी की हसीं याद,
मैं क्यों कहूं तुझे ग़ैर का सहारा न मिले।
मेरी अमानत ही सही तेरी ज़िन्दगी लेकिन,
क्यों कहूं तुझे कभी किनारा न मिले।

□

यूं ही साल गुज़रें गे, यूं ही साल आएं गे,
ज़िन्दगी उठाए हमीं जानें, किस मोड़ तक जाएं गे।

"सुम्मी"

कितने फ़ानूस फ़लक पे जगमगा उठे हैं,
फ़ज़ाओं के हाथ पे खिले मेंहदी के बूटे हैं।
तुम मेरे घर आई हो कौन सी बहार लिए,
मैंने आंगन में सितारे उतरते देखे हैं।

जाने किस आस्मां से चल के आई हो,
कितनी खुशियां दामन में समेट लाई हो।
मैंने फूलों को हंसते हुए देखा है,
मेरी आग़ोश में जब भी मुस्कराई हो।

तुम से खेलने आएं परियां वो गगन की,
तुम हो रौनक़ मेरे छोटे से चमन की।
बहार के पलने में पलो हंसते हुए तुम,
एक मासूम सी कली हो मेरे मन की।

यह नन्हे से हाथ-पांव जब भी हिलाती हो,
गुमां सा होता है जैसे मुझे बुलाती हो।
मेरे घर के चराग़ रोशन हैं तुम्हीं से,
मेरी संवरी हुई तक़दीर नज़र आती हो।

मैं इन्हीं हाथों पे उठाए रखूंगा तुम्हें,
दुनिया के ग़मों से छुपाए रखूंगा तुम्हें।
तुम हो "सुम्मी" मेरी मासूम सी बेटी।
अपनी पलकों पे बिठाए रखूंगा तुम्हें।

□

बड़े ही शौक़ से जिन्हें आप संवारा करते हैं,
उन्हीं पांव से चल कर मेरे दर तक आया कीजिए।

खिलवतें

मेरी महबूब तेरी यादों से आबाद हैं यह खिलवतें,
वरना सर को टकराने यहां पे कौन आए गा।
ऐसा भी क्या कि तरसूं तेरे दिदार को,
तेरी यादों से ही तेरा वजूद बन जाए गा।

इन हवाओं की तरह लहराते हुए तेरे गैसू,
सोचता हूं अभी मेरे चेहरे पे बिखराओ गी।
वो आंचल जहां मेरी ख्वाहिशें पला करती हैं,
साए में उसके मुझे सुला जाओ गी।

दूर मेरी निगाहें उठ के रह जाती हैं बारहा,
सामने पर्बत पे जैसे तुम खड़ी होती हो।
कोई बादल तुम्हारे वजूद से लिपट जाता है,
और देखते - देखते ही तुम कहीं खो जाती हो।

इन सब्ज वादियों से गुज़रती हुई यह नदी,
अपने शोर में तुम्हारी हंसी छुपाए रखती है।
पत्थरों से सर टकराती हुई सदियों से यहां,
हर मौज जैसे के साहिल को ढूंढती है।

इन तन्हाइयों में तेरे चलने की आवाज़,
जैसे पेड़ों के झुरमट से अभी निकल आओ गी ।
और मुझे देख कर मुस्कराती हुई बाहें उठाए,
दौड़ कर मेरे सीने से लिपट जाओ गी ।

हवाओं में तेरे नर्म हाथों के छूने का एहसास,
डर है कि बाक़ी दिन भी न गुज़र जाएं यहीं ।
तेरी यादों को पनाह देती हुई यह खिलवतें,
ऐसा न हो मेरा आशियां बन जाएं कहीं ।

□

तेरे आस्तां पे मोहब्बत की दौलत ले कर,
मैं खरीदने को तेरी बेरुखी आया हूं ।

अलविदा

चलो जाने वालों को अलविदा कह लें हम,
कुछ दोस्त जा रहे हैं जुदा होके आज।

बातों - बातों में ही आंख भर आती है,
दिलों के रिश्ते भी कितने पाक होते हैं।
किस मोड़ पे कोई कहां मिल जाता है,
ज़िन्दगी में यह भी अजब इतिफाक़ होते हैं।

कारवां की तरह चले जा रही है ज़िन्दगी,
किसी मुकाम से लौट कर नहीं आना है।
सभी राहें इक धुन्ध में खो जाती हैं,
यह दुनिया है क्या सिर्फ आना - जाना है।

जो दिन गुज़ारे हैं इन सब के साथ,
नहीं मुमकिन कि कल को भूल जाएें गे।
इक कसक सी दिल से उठा करे गी,
ज़िन्दगी में किसी वक्त जब याद आएें गे।

कल तुम यहां से जब चले जाओ गे,
इस जगह खेलती हुई तुम्हारी याद हो गी।

ग्रौर इक रोज़ हम भी चले जाएं गे,
नये चेहरों से यह जगह फिर ग्राबाद हो गी।

चलो खुश रहो जहां भी जाग्रो तुम दोस्तो,
हम दिल से तुम सब को दुग्रा देते हैं।
इस दौरान कुछ तलख़ियां हो गई हों ग्रगर,
ग्राग्रो इस मौक़े पे सब भुला देते हैं।

ग्रब ले कर दुग्राएँ हमारी साथ जाग्रो दोस्तो,
ग्रलबिदा है तुम सब को ग्रलविदा दोस्तो।

□

चाहत की नींव पर मोहब्बत का वो मकां,
तू चाहती तो महल भी बन सकता था।
ग्रच्छा हुग्रा दिवारों के निशां भी न रहे,
यूं ही खामख़ा इक दर्द पला करता था।

ज़िन्दगी और हम

यह उम्र गंवाने के बाद भी शायद हम,
ज़िन्दगी की हक़ीक़तें न समझ पाएं गे।
सदियों से चला आ रहा वही एक सवाल,
हम कौन हैं, क्या हैं, किधर को जाएं गे।

रिश्तों की बुनियाद पे दुनिया के मंच पर,
चार दिन के खेल के किरदार हैं हम।
क्या अपना है यहां जिस का दावा भी करें,
यहां सांसों के लिए भी कर्ज़दार हैं हम।

ज़िन्दगी एक शोर है और इस शोर के बाद,
एक हल्की सी आवाज़ भी न गूंज पाए गी।
और यह रूह जो पर्दा नशीं है आज,
सदियों बाद भी इसी जिस्म में न आए गी।

वो मोड़ जहां से हम गुज़र आए हैं,
आज इक धुन्ध में खो गये हैं कहीं।
कुछ चेहरे जिन के निशां भी नहीं मिलते,
वक्त की ख़लाओं में सो गये हैं कहीं।

ज़िन्दगी और मौत के दरम्यां यह फासला,
चन्द सांसों की एक मुख़्तसर कहानी है।
कभी किस्मत को रोए कभी वक्त को सराहा,
यह उम्र रफ्ता-रफ्ता यु ही गुज़र जानी है।

□

आखिरी बार तुम जहां मिल कर खो गये कहीं,
यादों के उसी मुक़ाम पे मुद्दतों हम बैठे रहे।

मेरी ख़ताएं

लुटी हुई बहारों में क्या ढूंढती रहती हो,
वो नज़र मुझ तक न पहुंच पाए गी।
अब सोग मनाते रहें या भूल जाएं सब,
किसी भी हाल में ज़िन्दगी गुज़र जाए गी।

यह भी मुमकिन है कि अब की बार,
हम मिलें तो वो मोहब्बत ही न हो बाकी।
तेरी भी हो गई हो किसी और से आशनाई'
मुझे भी रोक ले बढ़ के आरज़ू किसी की।

या हो सकता है वक्त के साथ-साथ,
ज़ख़्म भर जाएं तो नई आरज़ू जन्म ले ले।
और यादों की चिता की बची खाक पर,
ज़िन्दगी नये तौर से कोई नया खेल खेले।

इसलिए क्यों इक-दूसरे से कोई उम्मीद रखें,
क्या यह सब ग़ैर मुमकिन सी बातें नहीं।
उस वस्ल का अब ज़िक्र तक भी क्यों आए,
अब हमारे नसीब में वो मुलाकातें नहीं।

अब यही बेहतर है कि भूल जाएं सब क़िस्से,
जो वक्त हम ने गुज़ारा आ नहीं सकता।
चन्द उम्मीदों से मुझे आज भी देखने वाली,
एक ज़र्रा सर पे आस्मां उठा नहीं सकता।

इस लिए दे रहा हूं सब दुआएं तुझ को,
बहुत दूर आ चुका हूं न दे सदाएं मुझ को।
मेरी जफाओं को भूल कर ए जाने-वफा,
बख़्श दे आज मेरी सब खताएं मुझ की।

□

नजर चुरा के मेरे पहलू से निकल जाओ,
मैं गुजरा वक्त हूं मेरी आरज़ू कैसी।

सावन

किनने बदनसीब हैं वो लोग जो सावन में,
महबूब की बाहों से किनारा किये रहते हैं।
या बंद कर ज़माने की चन्द मजबूरियों में,
अक्सर तन्हाइयों का सहारा लिए रहते हैं।

सावन वो जन्नत है जो कुछ रोज़ के लिए,
ख़ुदा ने बन्दों पे मेहरबां हो के बख़्शी है।
इन दिनों हर शै का यह आलम होता है,
जैसे कोई दुल्हन संवर के हंसती है।

दूर गांव की उन मुड़ती हुई राहगुज़ारों पे,
बरसती हुई बूंदों में जब कोई आता है।
पानी के क़तरे उसे यूं बना देते हैं,
जैसे किसी हसीना का आंचल भीग जाता है।

वो रातों में कड़कती हुई बिजलियां हाए,
कितने ही बेताब सीनों को मिला देती हैं।
एक तूफां सा उठता है कहीं जज़बात का,
और पल भर में सब कुछ ही मिटा देती हैं।

यह हवाएं जैसे किसी के महकते हुए गेसू,
यह सब्ज़ो-बहार जैसे कि रंग बिखरा हो।
यह ख़ुमार, यह मस्तियां, यह मदहोश आलम,
जैसे कोई सितारों की ज़मीं पे उतरा हो।

मेरी हमनशीं आ के इस मस्त सावन में,
करवटें बदल रहे हैं चन्द तूफ़ान सीने में।
पंख लगा कर चली आ उड़ के तू,
ज़िन्दगी कुछ नहीं, तुझ से दूर जीने में।

□

सोए जब भी धूप में, सर्द मौसम में हम कभी,
गुज़रे ज़हन की राह से, कई तेरे ख्याल आ के,

नज़राना

तुम्हारे दर पे चला तो आया हूं मगर,
क्या मोहब्बत की बरबादी देख सकूं गा मैं।
तुम सुर्ख जोड़े में लिपटी हुई मेरी अमानत,
किसी और के साथ जाती देख सकूं गा मैं।

ज़िन्दगी कुछ इस तरह गुज़री तुम्हारे साथ,
तुम ने हाथ थामा भी नहीं, छोड़ा भी नहीं।
एक रूहानी रिश्ता जो कायम हो गया था,
तुम ने निभाया भी नहीं, तोड़ा भी नहीं।

मोहब्बत में इन नाकामियों को देख कर,
सोचता हूं आखिर मुझे तुम से क्या मिला।
लाख दर्दो - ग़म मुझे इस तरह बख्शने वाली,
क्या मेरी चाहत का बस यही था सिला।

कल इन राहों से तुम जब गुज़रो गी,
मैं कहीं से भी नज़र न आऊं गा।
तुम्हारी निगाहें जिन्हें मेरा कभी इन्तजार न था,
उन की हद से भी दूर निकल जाऊं गा।

दरिया-ए-दुनिया का यह साहिल तुम्हें मुबारक,
खुदा न करे इसे छोड़ कोई और किनारा ढूंढो,
या इस से भी शिकस्त खा कर कभी,
तुम किसी और की बाहों का सहारा ढूंढो।

चेहरे पे गिरा लो घुंघट और मैं भी,
उम्र भर के लिए मुंह फेर लेता हूं।
ले जा सको तो साथ ले जाओ तुम,
आज जिन्दगी का "नज़राना" पेश करता हूं।

□

इतने नाज़ुक हैं तेरे पांव, कि जा के गुलशन से,
फूल तोड़ के लाया हूं, तेरी राहगुज़र के लिए।

इल्ज़ाम

यह दुनिया है सिर्फ़ मतलब-परस्तों की दुनिया,
यह बात मैं नहीं, अक्सर तुम्हीं कहा करती हो।

तुम्हारी नजरों में जहां मोहब्बत के नाम पर,
दिली जज़बात की भी कीमत लगाई जाती है।
जहां चाहत मतलब-परस्ती के सिवा कुछ नहीं,
जहां मोहब्बत पे हवस के इल्ज़ाम लगाए जाते हैं।

यह सब तुम्हारी ही दुनिया में होता होगा,
मेरी दुनिया में मोहब्बत आज भी पाक जज़्बा है।

आज मेरे जज़बात की कोई कीमत न सही,
मेरी मोहब्बत से बढ़ के कोई तोहमत न सही।
तुम्हें चाह कर मैं आज मतलब-परस्त ही सही,
लेकिन मेरी महबूब कुछ मुझे भी कहने दो,
कहने दो कि तुम ही मेरी चाहत के काबिल नहीं।

□

वक्त के धारे

इतनी हैरान क्यों हो क्या तुम्हें नहीं खबर,
कई बार दास्तां भी हक़ीकत हो जाती है।
आज जिन्दगी हसीं नहीं तो परेशां भी नहीं,
हां, तुम्हीं जैसों से मोहब्बत जिल्लत हो जाती है।
मैं सितम की हर हद को दबा सकता हूं,
तुम से इन्तहाई का फिर गिला कैसा।

इन नाकाम से लम्हों पे आंसू क्यों बहाएं,
यह वक्त के धारे हैं फिर मुड़ जाएं गे।
जिन्दगी इत्तिफ़ाक है और इत्तिफ़ाक से ही कभी,
तुम्हारे वही कदम फिर इधर मुड़ आएं गे।
मैं किसी और से भी निभा सकता हूं,
तुम से बेवफ़ाई का फिर गिला कैसा।

आओ इन चाहत की बस्तियों को ही फूंक डालें,
ताकि मोहब्बत फिर कभी जवां न हो सके।
न कोई अरमान जले फुरकत की आग में,
न दिल तुम्हारे दामन से लिपट के रो सके।
मैं तन्हा ही मन्ज़िल तक जा सकता हूं,
तुम से जुदाई का फिर गिला कैसा।

□

सितारों तक

मेरी हमसफर चलना है दूर सितारों तक।

उन ख्वाबों से परे जहां तक कोई,
न पहुंचा हो न देखे हों कभी।
उस आस्मां से आगे, आज तक जहां,
फरिश्तों ने पांव भी न रखे हों कभी।
इस जमीं पे अपनी कहीं मन्जिल नहीं,
मेरी हमसफर चलना है दूर सितारों तक।

तेरे गैसुओं के साए में चल कर,
तपते सहराओं से भी गुजर जाएं गे।
जिन्दगी किसी हद की पाबन्द तो नहीं,
आज यहां तो कल वहां नजर आएं गे।
दो कदम चल कर न थक जाना कहीं,
मेरी हमसफर चलना है दूर सितारों तक।

यह दुनिया खूबसूरत ही सही लेकिन,
खारों की तरह लोग भी यहीं रहते हैं।
भंवर के डुबोने का न हो डर जहां,
पानी के तेज धारे उधर ही बहते हैं।

इसलिए यहां रुकना मुनासिब नहीं होगा।
मेरी हमसफर चलना है दूर सितारों तक।

इन यादों के झरोखों से गुजर कर,
चलो मुड़ के पीछे न देखें गे कभी।
यह मुड़ती हुई राहें और खामोश से मोड़,
हमारे पीछे-पीछे ही चले आएं गे सभी।
हर राह से आओ दौड़ते हुए चलें,
मेरी हमसफर चलना है दूर सितारों तक।

□

तेरे बगैर आज भी जी रहे हैं मगर,
जिन्दगी अब वो दिलकश साज नहीं।
तेरी गलियों में सब कुछ वही है लेकिन,
मुझे पुकारती हुई वो तेरी आवाज नहीं।

यादें

तुम्हारी याद हम से दामन गर छुडा लेती,
ज़िन्दगी की हसीन राहों से गुज़र गये होते।
माज़ी की आग़ोश में जी रहे हैं वरना,
यादें यह न होतीं तो मर गये होते।

कई बार शाम की ख़ामोश तन्हाइयों में,
हमने तुम्हारे रुखसार को फिर छुआ है।
हल्के से मुस्कराती हुई करीब आ बैठी हो,
यह गुमां तो हम को सौ बार हुआ है।

हाथों में हाथ थामे आज भी जैसे,
गुफ़तगू करते हुए चल रहे हों हम।
बैठे - बैठे यूं ही लबों पे हंसी आ जाना,
तुम्हारे पहलू में जैसे मचल रहे हों हम।

हमारी आंखों में वो ख़्वा आज भी हैं,
तुम ने सजाए थे जो हमारे साथ कभी।
वो लम्हे भी न भूल पाए हैं आज तक,
हम ने गुजारे थे जो तुम्हारे साथ कभी।

चन्द रिश्ते रूह से भी ताल्लुक़ रखते हैं,
जिस्मों का मिल जाना ही चाहत नहीं होती।
मोहब्बत करने वालों का जीना आसां न समझो
मोहब्बत दुनिया में सिर्फ़ कहावत नहीं होती।

कल की बातें आज यादें बन गई हैं,
आज की बातें कल यादें बन जाएँ गी।
इसी दुनिया - तलक हैं यादों के सिलसिले,
इस दुनिया से आगे हमें न ढूंढ पाएँ गी।

□

तुम्हारे करम को तरसती हुई दम तोड़ कर,
वक्त के कांधे पे जा रही चाहत है।
ग़मों के सहरा में न खो सके हम ही,
ज़िन्दगी आज भी जैसे कि तेरी अमानत है।

दुल्हन

मेरे अरमानों की डोली में बैठ कर आने वाली,
मेरी ज़िन्दगी में क्या - क्या न बहार लाई हो।
मेरे ख़्वाबों की इन महकती हुई राहों पर,
किस क़द्र चांद सी दुल्हन बन के आई हो।

तुम्हारे महकते हुए सांसों की खुशबू पा कर,
ज़िन्दगी को चमनज़ार बना लूं गा मैं।
मुझे इस मतलब परस्त दुनिया से क्या लेना,
तुम्हारी आंखों में नया संसार बसा लूं गा मैं।

यह मेंहदी लगे से हाथ यह नज़र झुकी-झुकी,
यह होंठों की थरथराहट यह दिल का धड़क जाना।
यह सिमटता हुआ बदन हया के सुर्ख जोड़े में,
यह बहके हुए जज़बात यह आंचल का ढलक जाना।

मेरी हमख़याल, मेरी दोस्त, मेरी हमसफर,
इन ज़ुल्फ़ों के साए में सो जाने दो मुझे।
इस रात का बहुत किया है इन्तज़ार मैंने,
इस रात इन आंखों में खो जाने दो मुझे।

चलो अब भूल जाएँ कल के सब क़िस्से,
आज इक नई ज़िन्दगी का आग़ाज़ होना है।
आज मुझ से न शरमाओ ऐसे बार - बार
अब उम्र भर मेरी बाहों में तुम्हें सोना है।

अब रुख से उठा दो चिलमन देखें ज़रा इस चांद को,
मुरादों भरी यह आज की, हसीं रात जा रही है।

□

तेरे बदन को चूम कर आती हुई हवाएँ,
कैसे कहती हो कि मुझ तक पहुंच नहीं सकतीं।
तुझे लाख ज़ब्त सही अपने जज़बात पे लेकिन,
मौजें भी सदा साहिल से टकराया नहीं करतीं।

ग़द्दार

तुम वो नहीं जो सर पे कफ़न बांध लेते हैं.
तुम वो भी नहीं कि वफ़ा ही कर सको।
या अपने किसी अजीज या मुल्क़ की खातिर,
अपनी यह मतलब-परस्तियां छोड़ के मर सको।

दुनिया की नजर में तुम लाख फरिश्ता बनो लेकिन,
हमारी नजरों में तुम क्या अहमियत रखते हो।
अपने आप को रहनुमा या कुछ और न समझो,
तुम सिर्फ एक ग़द्दार की हैसियत रखते हो।

इस सागर नुमां दुनिया में कौन पूछे गा तुम्हें,
यहां पे तुम क्या हो तुम्हारी बात क्या है।
ग़ैर के आस्तां पे दामन फैलाने वाले मेरे दोस्त,
अपने ही दिल से पूछो तुम्हारी औक़ात क्या है।

तुम्हें इस पाक जमीं की खाक भी न हो नसीब,
तुम्हारी इन्सानियत तुम्हें यही बददुआ देती है।
हर शै के मोहताज बन के रहो जमाने में,
तुम्हारी ज़मीर आज तुम्हें यही सजा देती है।

तुम्हें किसी ने किसी क़ाबिल था गर बना दिया,
इस के माइने यह न थे कि तुम उसे छोड़ देते।
वो क़दम से क़दम मिला कर चलने की कस्में,
चन्द रोज़ के बाद ही तुम सब तोड़ देते।

ईमान फ़रोशों की ज़िन्दगी महज़ काबिले-लानत है,
इन की मौत पे कोई भी आंख रो नहीं सकती।
इन से कह दो किसी और जहां में चले जाएँ,
यह ज़मीं ग़द्दारों की मलकियत हो नहीं सकती।

□

इन आंखों में डूबती हुई मेरी कश्ती-ए-हयात,
हल्के से तूफां में भी खो सकती है कहीं।
यह ज़िन्दगी जिसे तेरी ज़ुल्फ़ का साया न मिला,
मौत के साए में भी सो सकती है कहीं।

तेरे शहर से

यह रात का आलम और तेरे शहर से गुज़रना,
कितने हसीन ख़्वाबों में खोई होगी तु।
हवा तेरे होंठों को चूम रही होगी,
और पलकें बन्द किए सोई होगी तु।

तेरे शहर में यह जगमगाती हुई रौशनियां,
तेरे क़रीब हज़ार ख़ुशियों का पता देती हैं।
चन्द मुसाफ़िर जो तेरी राह से गुज़रते हैं,
तेरे शबस्तां का उन्हें रास्ता बता देती हैं।

तेरी उस शोख़ मुस्कराहट के फूल क्या,
मेरी ख़ातिर आज भी खिलते होंगे।
वो होंठ जो थरथरा से जाते थे,
मेरे नाम पे क्या आज भी हिलते होंगे।

दिल में हसरत है कि तुझे मिलता जाऊं,
लेकिन सोचता हूं क्या यह मुनासिब है।
पत्थर बन के रोक लुं उस को कैसे,
इक शोहरत जो रवां तेरी जानिब है।

इस रात के बाद जब सहर होगी,
ज़र्रे-ज़र्रे पे गिरी शबनम तुझे बताए गी—

वह जिस के बग़ैर तुझे क़रार न था,
जिसे छोड़ तुझे किसी से प्यार न था।
जिस की बाहों में तेरा शबाब खिलता था,
जिसे पा कर तेरे दिल को क़रार मिलता था।

सुबहो-शाम तु जिस का इन्तज़ार करती थी,
जिस की याद में आहें बेशुमार भरती थी।
कल रात तेरे शहर से तुझे क्या खबर,
तु सोती ही रह गई और वो गुज़र गया।

□

तेरे पहलू से उठ कर जाने वाले,
दमे-आखिर-तलक भी न संभलते होंगे।
क्यों न खुद को ही वो खुदा कहे गा,
जिस के चेहरे पे तेरे गेसू बिखरते होंगे।

नया साल

आज नये साल के इस मुबारक मौक़े पर,
आओ चन्द लम्हों के लिए सारे ग़म भुला डालें।
ज़िन्दगी कशमकश से आगे कुछ और भी है,
यह उठते हुए जज़बात यूं ही क्यों दबा डालें।

फूल इस तरह से खिल उठे हैं आज,
जैसे किसी के मासूम होंठ मुस्कराए हों।
या किसी नाज़नीं के रेशमी आंचल के तले,
सितारे फलक से ज़मीं पे उतर आए हों।

नये साल की खुशआमदीद में कलियों ने कहीं,
घुंघट उठा कर यह आज देखा है किसे।
किस के गैसुओं की जानिब घटाएं लपकी हैं,
किस ने प्यार की डोर से बांधा है किसे।

किस की बाहों के हार उठे हैं जोश में,
कौन किस के सीने से लग गया है कहीं।
किस के महकते रुखसार हवा ने चूमे हैं
किस के चेहरे पे और शबाब आया है कहीं।

यह हसीन लम्हे और यादों के चन्द फूल,
क्यों न दामन में अपने समेट लें आज।
बहारों के फैले हुए यह रंगीन आंचल,
उम्र भर के लिए ख़ुद से लपेट लें आज।

नया साल सब को मुबारक़ हो आज के दिन,
ख़ुदा करे यह दिन हमेशां हम मनाते ही रहें।
खिज़ाओं के साए हों या बहारों की आग़ोश,
हर हाल में हम सदा मुस्कराते ही रहें।

□

मेरी तबाहियों के साथ तुम्हारा नाम क्यों आए,
मेरी चाहत के समन्दर में कमल हो तुम।
तुम्हें तपते सहरा की हवा तक न लगे,
मेरे शेर, मेरी शायरी, मेरी ग़ज़ल हो तुम।

ख़ुमार

मैंने ख़्वाबों में तुम्हें सामने पा कर,
अपनी इन्हीं बाहों में कई बार उठाया है।
फिर शरमा के तुम सिमट सी गई हो,
और चेहरे को अपने हाथों में छुपाया है।

तुम्हारे होंठ जो अक्सर खामोश रहते हैं,
एक हसरत है कि मुझे पुकार लें कभी।
मेरे जज़बात जो तुम तक पहुच नहीं सकते,
तुम्हारी बाहों में चन्द लम्हे गुज़ार लें कभी।

जाम होंठों तक लाने से मुझे रोकने वाली,
क्या अपनी आंखों का ख़ुमार दे सकती हो।
या मेरे ज़हन को जकडती हुई बेशुमार,
अपनी यादों को वापिस ले सकती हो।

यह बदन, यह लबो-रुख़सार ग़ैर ही सही,
लेकिन मैं इन्हें सराह तो सकता हूं।
ज़िन्दगी तुम्हारे साथ गुज़ारना मुमकिन न सही.
मेरी महबूब मैं तुम्हें चाह तो सकता हूं।

मेरे दिल में कई बार यह ख़याल आया है
जैसे बन के दुल्हन शरमा रही हो तुम।
सुर्ख जोड़े में चेहरे पे घूंघट गिराए हुऐ,
सिमटी हुई मेरी जानिब आ रही हो तुम।

यह ख़याल जो हकीकत न बन सका कभी,
कौन जानता है कल क्या रंग लाऐ गा।
यह कुंवारी आंखें फिर न देखें गी मुझे,
पलक झपकते ही सब कुछ बदल जाऐ गा।

□

मेरी चाहत को ख़ता समझने वाली यह बता,
तेरी नज़रों में चाहत की क़ीमत क्या है।
माना कि मेरी आरज़ू ग़लत ही सही लेकिन,
फिर यह दिली रिश्तों की हक़ीक़त क्या है।

इक शायर बदनाम सा

गैसू बिखरा के न तुम आया करो,
ज़ुल्फों को चेहरे पे न फैलाया करो।
इठला के इधर - उधर न जाया करो,
नाज़ से आंचल भी न लहराया करो।

मेरा क्या है इतना भरोसा ठीक नहीं,
कहीं कोई शेर न तुम पे कह दूं।
मैं इक शायर हूं बदनाम सा॥

माना कि आज तुम पे जवानी है,
तुम्हारा हुस्न शोलों की कहानी है।
तम्हारी यह उम्र इक शाम सुहानी है,
और तुम पे खुदा की मेहरबानी है।

लेकिन खुदारा इतने भी न सितम ढाओ,
लिख डॉलू गा तुम पे ग़ज़ल कोई।
मैं इक शायर हूं बदनाम सा॥

आज तुम मुस्कराओ तो फूल खिलते हैं,
तुम्हारे क़रीब जन्नत के नज़्ज़ारे मिलते हैं।

तुम्हे देख सभी दिल थामे चलते हैं.
मैं ही नहीं तुम पे सारे मरते हैं।
लेकिन न मग़रुर वनो वक़्त के खुदा,
सरे ग्राम न कह दूं कुछ तुम्हें।
मैं इक शायर हुं बदनाम सा।।

इन ग्रॉखों से ग्राज क्यामत बरसती है,
तुम्हें देखने को हर रुह तरसती है।
तुम्हारी वाहों में कायनात सिमटती है,
तुम से चमन तो कया ज़मीं महकती है।

मगर इक रोज़ सब ख़त्म हो जाना है,
सुहानी शाम के बाद रात ने ग्राना है।
तब भी तुम्हारे झुरियाँ पड़े चेहरे पे,
मैं चन्द शेर तारीफ के कहा करुं गा।

तुम्हारा शबाब तो न रहे गा लेकिन.
मैं तो इक शायर ही रहूं गा।
मैं इक शायर बदनाम सा।।

□

यह दुनिया है जब रस्मो - रिवाज की दुनिया,
फिर क्यों कहूं इन रिवाजों को तुम तोड़ दो।
तुम्हारी खुशी में ज़माना भी तो है शामिल;
मैं क्यों कहूं मेरी खातिर इसे तुम छोड़ दो।

वादिए-सन्नासर

शफ़ाक बदन से भी निगाह फ़िसल जाती है मगर,
खुदाई जल्वों से जो हट जाए वो नज़र कहां।
दुनिया में होंगे नज़ारे और भी खूबसूरत
लेकिन वो ज़मीं, वो जन्नत, वो सन्नासर कहां।

वो सब्जो-बहार वो महकती हुई हवाएं,
वो आस्मां छूते पर्वत वो बहता हुआ पानी।
वो सकूं देती खामोशियां, वो अजीब सा आलम,
गुज़रे वहां जो चार दिन, है वही जिन्दगानी।

ता कयामत सर पे उठाए क़ुदरत का एहसान,
हसीं लम्हे वहां यूं ही गुज़रते जाएं गे।
यह मुबारक दिन जो हर साल आता है,
आज हम मना रहे हैं कल और मनाएं गे।

किसी शायर के तसव्वुर से भी हो परे तुम,
कितने दिलकश नज्ज़ारों ने तुम्हे पाला है।
खुदा करे के गुज़रे तेरे दामन के साए में,
वो वक्त जो कल को आने वाला है

□

कल

मेरी महबूब मुझे कल पे यकीं नहीं,

कल यह भी तो हो सकता है
तुम हसीं न रहो मैं जवां न रहूं।
या तुम कहीं और दिल लगा बैठो,
और मैं तुम्हारे दिल का अरमां न रहूं।

यह कसमें न उठाओ क्यों कि मैं ने,
आज तक निभाते किसी को देखा ही नहीं।
वक्त बदल जाता है इन्सान बदल जाते हैं,
और फिर मेरी दोस्त खुदा तुम भी नहीं।।

हम दोनों में आज यह जो तआरुफ़ है,
कौन जाने कल यह भी रहे के न रहे।
मोहव्वत का जोश बहता हुआ दरिया है,
क्या पता यह कल बहे के न बहे।

यहां हर हसीना होती है बादल सावन का,
जो कहां गरजे, कहा बरसे, कुछ खबर नहीं।
कौन जाए इन के दिलकश तबस्सुम पर,
वहा तो बिजलियों का भी गुज़र नहीं।

आज तुम हसीं और में भी जवां हुं
और तुम्हारे दिल का भी तो मेहमां हुं।
तुम्हारे गैसुओं में अभी घटाओं की स्याही है
इन महकते रुखसारों में सहर की लाली है।

अभी यह निगाहें मेरे इन्तज़ार में थकती नहीं,
और ग़ैर की जनिब भी यह उठती नहीं।
यह बाहें, यह तब्सुम, यह शोखियां तुम्हारी,
मैं जानता हुं मुन्तज़िर है मेरे लिए सारी।

आज मेरी ख़ातिर मीलों भी चल सकती हो,
लेकिन आज के बाद कल बदल सकती हो।
इस लिए कल का इन्तज़ार ही क्यों करें,
मेरी महबूब मुझे कल पे यक़ीं नहीं।

❑

मेरी बातों पे सर झुका के तुम,
होंठों में मुस्कराहट को दबा लेती हो।
तुम्हें क्या ख़बर इस तरह और भी,
मेरी महबूब शोलों को हवा देती हो।

हादसे

आज पशेमानी से क्यों सर झुका लिया तुम ने,
मेरी तरफ देखो इन निगाहों में कोई गिला नहीं।
शमा बुझ ही जाती है हवा के झोंकों से,
स्याह रातों की आग़ोश में कभी चांद पला नहीं।

जब मेंहदी ही लगा चुकी हो हाथों में,
तो फिर यह आंसू बहाने से क्या होगा।
बहुत मुश्किल है जिन्दगी भर याद रखना,
मेरी महबूब कसम उठाने से क्या होगा।

अच्छा हुआ तुम ने बग़ाबत न की जमाने से,
वरना कौन उठाए फिरता बोझ रुसवाइयों के।
यह जजबात, यह चाहत तुम वहीं भूल जाओ गी,
कोई छुए गा जब सुर्ख गजरे इन कलाइयों के।

भार-ए-ग़म से इस तरह दबना भी ठीक नहीं,
यह जिन्दगी के हादसे हैं गुजर जाएें गे।
तुम कौन सी मोहब्बत की बात करती हो,
कल इस के निशां भी न नजर आएें गे।

जिस दुनिया में चाहत एक रस्म बन जाती है,
उसी दुनिया में तुम और मैं भी हूं।
चन्द हसीं ख़्वाब तुम ने भी तो देखे होंगे,
फिर इसे तुम्हारी बेवफाई भी क्यों कहूं।

चलो गुज़रते हुए लम्हों की तरह,
इक-दूसरे के क़रीब से गुज़र जाएं।
और जैसे वक्त लौट कर नहीं आता,
हम भी न कभी लौट कर आएं।

□

मेरे ख़्याल यूं बारहा छू लेते हैं तुम्हें,
जैसे तुम चांद के माथे पे क़दम रखती हो।
या किसी चांदनी रात के महकते आलम में,
हवा के शानों पै पांव रख के चलती हो।

आओ वक्त की रफ़तार चलें

आओ अपने हालात को हम ख़ुद संवार लें।
ज़िन्दगी जीना ही नहीं कुछ और भी है।
इन चलते फिरते जिस्मों को खींचती हुई,
हमारी निगाहों के परे इक डोर भी है।

बहुत देर है अभी सितारों को छूने में,
यूं समझो आग के शोलों से गुज़रना है।
और वक्त की करवटों से बचते हुए,
हमें वक्त की रफ़तार से भी तेज़ चलना है।

निगाहें खोल कर ख़ुद को देखो तो ज़रा,
आज अपने ही पांव की ज़न्जीर हो तुम।
यह झुके हुए सीनों में सोए हौसले,
कौन कहे गा हिन्दोस्तां की तक़दीर हो तुम।

यह राहें जो मुस्तक़बिल की ओर जाती हैं,
इन्हीं पे चल के मंजिल को ढूंढ लेंगे हम।
सिर्फ मुकद्दर के सहारे ही न क़दम उठाएं गे,
वक्त की रफ़्तार से भी तेज़ चलें गे हम।

□

दिलरुबा न खराब हो

मेरे हाथों में जिस रोज तुम्हारा हाथ आए गा,
उस रोज हमीं नहीं जमाना वदल जाए गा।
आज संभल-संभल कर चलने वाली तुझे क्या खबर,
कल तुम्हारे दिल पे किस का ज़ोर चल जाए गा।

यह महकते हुए रुखसार तुम अगर चाहो तो,
मेरे पहलू में और भी खिल सकते हैं।
यह दिल जो इक - दूसरे से हैं ग़ाफ़िल,
तुम चाहो तो आज भी मिल सकते हैं।

मगर तुम तो वह हो, जिस के ख़्यालों में,
हर पल इक नई तस्वीर बना करती है।
जिस की चाहत किसी एक की मोहताज नहीं,
जिसे हर इक की तमन्ना हुआ करती है।

ए - मलिका - ए-हुस्न न यूं बरबाद हो,
जमाना है खराब न इतनी आज़ाद हो।
तुम जिसे आज इक हसीं ख्वाब समझती हो,
यही ले डूबे गा तुम्हे क्यों बहकती हो।

चार दिन बाद तुम होश में तो आओ गी,
उस वक्त लेकिन कुछ भी न पास पाओ गी।
तब तुम्हारे इस वदन को न कोई चाहे गा,
न इन खूबसूरत आंखों को कोई सराहे गा।

तुम्हे देख कर सब नज़र चुरा जाएं गे,
तुम्हारे यही दीवाने न तुम्हारे करीब आएं गे।
इसलिए ए-दिलरूबा भूल जाओ सब नज्ज़ारे,
उम्र कट नहीं सकती हर इक के सहारे।

अब किसी एक को अपना हमराज़ बना लो,
आंखों की राह से दिल में बसा लो।
वही दमे-आख़िर तक तुम्हारा साथ निभाऐ गा,
तुम्हारी हर सांस का साज़ बन जाएगा।
और तुम्हे हर मोड़ पे अपना नज़र आए गा,

इसलिऐ ए-दिलरूबा न इतनी आज़ाद हो।
ग़ैर ग़ैर हैं उन के लिए न बरबाद हो॥

□

नये साल की मुबारक़

यादें कुछ पुरानी सी,
दिन वो गुज़रे हुए ।
इक धुन्ध में खोई राह पे,
तेरी चाहत के फूल बिखरे हुए ।

सब को उठा-उठा के मैं,
तेरा आंचल भर रहा हूं आज ।
वो शोखी, वो तब्बसुम,
वो खुशी, वो जोश ।

नये साल की मुबारक़ के साथ,
तुझे सब कुछ लौटा रहा हूं आज ।

□

लौट के आ

चाक दामन लिए बैठे हैं तेरी याद में,
ए गुजरे हुए वक्त जरा लौट के आ।

वो जुल्फ़ो-रुखसार, वो लब, वो निगाहें,
मैंने सोचा था मेरी जागीर हैं शायद।
वो खुले गैसु, वो शोख अदाएँ उन की,
मैंने सोचा था मेरी तक़दीर हैं शायद।

आज लेकिन वो ख़याल हकीकत न बना,
ऐ गुजरे हुए वक्त ज़रा लौट के आ।

क्या सुनें दिल की या कहें अपनी हम,
सभी अन्धेरी राहों पे चराग़ नही जलते।
कौन चाहत पे ही इल्ज़ाम लगाए अब,
सब ख़याल भी हकीक़त नही बनते।
मोहब्बत में सलामत कोई ही रहा ।।

ए गुजरे हुए वक्त ज़रा लौट के आ,
चाक दामन लिए बैठे हैं तेरी याद में।

□

आशाएं

जीवन के अन्धेरे कितने गहरे,
कदम-कदम पे मौत के पहरे।

मन है कोमल दुनिया ज्वाला,
क्या जाने, कहां जल जाएं गे।
नाम ही बस रह जाए गा,
और न हम कल आएं गे।

सपनों की तरह हैं आशाएं,
पर धूल में मिलती देखी हैं।
यह मन के बन्धन कैसे तोड़ें,
सांसें भी इन्हीं से चलती हैं।

यादों के झरोखों से हो कर,
यह राह कहां से आती है।
और बदन से पंख लगा कर,
यह रूह कहां उड़ जाती है।

महलों से भी ऊन्चे होते हैं,
जो दिलों के रिश्ते बनते हैं
मौत भी क्या तोड़े गी इन्हे,
बस चेहरों के रूप बदलते हैं।

□

गीत

तुम भी चाहो गे हम को एतबार कहां,
अपने जज़बात पे किसी का इख़ितयार कहां।

हम हैं वो जो अश्कों को छुपा लेते हैं,
और हो तुम, जो दामन को बचा लेते हैं।
तुम करो गे हमारा कभी इन्तज़ार कहां,
अपने जज़बात पे किसी का इख़्तियार कहां।

हो के नाकाम जब दुनिया से कल जाएं गे,
चिता के शोलों पे अरमान भी जल जाएं गे।
खाक से हमारी उठे गा फिर गुब्बार कहां,
अपने जज़बात पे किसी का इख़्तियार कहां।

तुम वो ख़्वाब हो जो न टूटे गा कभी,
तुम्हारी याद का दामन भी न छूटे गा कभी।
हम किसी और के बनें गे तलबगार कहां,
अपने जज़बात पे किसी का इख़्तियार कहां।

तुम ने किसी और के सीने से लिपटना चाहा,
सुर्ख़ जोड़े में करीब उसके सिमटना चाहा।
आज दुनिया में वो चाहत वो इक़रार कहां,
अपने जज़बात पे किसी का इख़्तियार कहां।

□

गीत

बाहों में आ भी जा मौसम हसीं है आज,
इस से तो आगे कोई जन्नत नहीं है आज।

जी में आए उड़ चलें, बादल के साथ - साथ,
और जा के पहुंचें, आस्मां के पास।
हम को बुला रही कोई शै कहीं है आज। बाहों में...

बूंदों के बरसने से, हम को सकूं मिले,
मस्त हवा से लेकिन, दिल और भी जले।
जन्नत और दोजख, जैसे यहीं हैं आज। बाहों में...

यूं बाहों में अपनी ही, सिमटे हुए हैं हम,
दामन से जैसे तेरे, लिपटे हुए हैं हम।
तू है जहां भी यार, सब कुछ वहीं है आज। बाहों में...

पायल सी बांध कर, रक़्सां है यह बहार,
कब से है कर रहे, तेरा ही इन्तजार।
फूलों से सज गई, सारी जमीं है आज। बाहों में...

□

गीत

क्या किया आप ने एहसास को मारा है,
इक तरफ़ आप इक तरफ़ जहान सारा है।

आप के साथ बड़ी दूर तक जाएँ गे,
आप से उम्र भर हमीं तो निभाएँ गे।
आप के नाज़ तो क्या ग़म भी उठाएँ गे,
अब तो हर एक सितम भी गवारा है।
क्या किया आप ने एहसास को मारा है॥

हम ने चाहा था जिसे वो आप नहीं,
वरना होते न आज हम कहीं, आप कहीं।
और वो दिन कहां चाहत पे करें आप यकीं,
छोड़िए दिल की लगी का भी कोई चारा है।

क्या किया आप ने एहसास को मारा है॥
कल न हम होंगे न चाहत होगी,
कल किसी और से आप को मोहब्बत होगी,
कल दुनिया तो क्या आपकी जन्नत होगी।
सिर्फ़ हम से किया आप ने किनारा है,

क्या किया आप ने एहसास का मारा है,
इक तरफ़ आप इक तरफ़ जहान सारा है।

□

ग़ज़ल

सरे-महफ़िल तुम से माना, रुदादे इश्क़ बताई न गई,
राज़ की बात भी लेकिन, तुम से छुपाई न गई।

खुद ही देते रहे हैं शोलों को हवा हम,
दामन से लगी आग तो, हम से बुझाई न गई।

दिल जो कहता ही रहा, कहने को सनम तुझ से,
होंठों पे वही बात कभी, हम से लाई न गई।

यह भी क्या मोहब्बत है, खुद से ही ज़रा पूछ,
हम ख़ाक हो गये मगर, तेरी रुसवाई न गई।

किस के दामन पे हुई—तेरे अश्कों की बरसात,
हम ने पूछी जो सनम—तुझ से बताई न गई।

हम ही थकते नहीं थे, देख कर तुझे ए-दिलरुबा,
हम से ही आज मगर यह नज़र उठाई न गई।

डूब जाएँ गे तेरे साथ, हम भी, गर 'साहिल' तक,
तुम से कश्ती यह तुम्हारी, मुड़ के लाई न गई।

□

ग़ज़ल

कभी याद तुझे करते रहे, कभी अश्क ही बहाते रहे,
हम तेरे ग़मों से ही, ज़िन्दगी भर निभाते रहे।

कोई आह तेरा घर कहीं, जला न दे यही सोच कर,
घुटते हुए सांसों को भी, सीने में हम दबाते रहे।

ज़ुबां न वो खोल सका, बात भी न समझा कोई,
किस ख़ुदा के आगे यह, सर को हम झुकाते रहे।

अब, मोहब्बत में और क्या रुसवा होने को रह गया,
सर पे कई बार हम, इल्ज़ाम तेरे उठाते रहे।

एक लम्हा भी न गुज़रा, तेरी याद से ख़ाली कभी,
ज़िन्दगी भर तेरा ही बस, कर्ज़ हम चुकाते रहे।

□

ग़ज़ल

अब तो सिर्फ़ ग़र्दो - ग़ुब्बार छाए गा,
कौन तेरे गैसुओं से घटा लाए गा।

यह झटकना सर का हाए तौबा,
इस अन्दाज़ पे कोई मर जाए गा।

रुख़सार पे उंगली और फ़लक पे नज़र,
आज ज़मीं पे आस्मां उतर आए गा।

बन्द रखिए इन को ख़ुदा के लिए,
इन आंखों में कोई डूब जाए गा।

उसे इन्सां नहीं फ़रिश्ता कहें गे लोग,
सुर्ख़ जोड़े में तुम्हें जो पाए गा।

मेरी आखिरी सांस तक है मेरा फसाना,
कौन कल को मेरे गीत गाए गा।

□

ग़ज़ल

दर्द हो या ग़म कोई, सीने में छुपा लेते हैं,
हम भी क्या चीज़ हैं, दिल से लगा लेते हैं।

तेरी आंखों से गिरे हुए, अश्क़ उठाना ताज्जुब नहीं,
तेरे पांव को चूमती हुई, ख़ाक भी उठा लेते हैं।

इक परवाने की हैसियत से, राख होने से ज़रा पहले,
दामन को हिला के हम, शमा को बुझा लेते हैं।

आप को हम से शिकायत, और वो भी रुसवाई की,
हम तो सीने में ही, हर बात दबा लेते हैं।

इन को ग़ैरत भी नहीं, उन को एहसास भी नहीं,
यह लोग शर्म के परदे, निगाहों से हटा लेते हैं।

कांधे से तेरे लग कर, हम भी सोते थे कभी,
आज अपने ही शाने पे, सर को झुका लेते हैं।

आप ही डर जाएं गे, दुनिया की आंधियों से,
हम तो 'साहिल' हैं जो, तूफानों से निभा लेते हैं।

□

ग़ज़ल

बड़े रंगीन दिन थे, बड़े रंगीं नज़ारे,
मोहब्बत की ज़ुबां थे, निगाहों के इशारे।

वक्त-वक्त की बात है, छोड़ो पुराने किस्से,
अब कहां तुम हमारे, कहां हम तुम्हारे।

कौन मर्जी से यहां, गया है मर्ग तक,
खींच कर ले गये हैं, वक्त के धारे।

सब को आजमा लिया, सब बेवफा निकले,
बड़े ग़लत दावे थे, दोस्तों पे हमारे।

लौटना इस मोड़ से, नहीं रहा मुमकिन,
बड़ी दूर आ कर, हम तुम से हारे।

अक्सर ढूंढते हैं, तुम्हें इधर - उधर,
कितने परेशान हैं, हालात के मारे।

□

ग़ज़ल

मोहब्बत के तमाम ग़म, आंसुओं में बहा दें गे,
चाहत कोई तमाशा नहीं, जिसे हम दिखा दें गे।

क़ब्रों को ही उखाड़ दो, हर सू छाई बरबादियों,
इस उजड़े हुए शहर में, किस को हम सदा दें गे।

चलो दुनिया में तुम्हें, कोई तो रास आ गया,
हम तेरे बग़ैर भी, जिन्दगी यह बिता दें गे।

जिन्दगी मौत के शाने से, टकरा के निकल जाती है,
सीने में लगी आग को, कहां तक यूं हवा दें गे।

चाहत में अक्सर होता है, राहें जुदा हो जाती हैं,
तुम सवाल क्या पूछो, हम जवाब क्या दें गे।

□

ग़ज़ल

ज़माने में इक तेरी ख़ातिर, कुछ ऐसे हुए मजबूर हम,
निभाते-निभाते थक गये, ज़िन्दगी के चन्द दस्तूर हम।

मोहब्बत ने भी छुपा लिया, अपने ही गिरेबां में चेहरा,
चाहत के पाक दामन पे, इस कदर बने नासूर हम।

राहों में उड़ती गर्द भी, चमन तक पहुंच जाती है,
आंचल-तलक ही यार के, न पहुंचे दिले-मग़रूर हम।

शायद ही अब पाएँ कभी, साए वो तेरे गैसुओं के,
किनारों की तरह आज कल, हो गये हैं दूर हम।

तुम अपनी जफा के लिए, हम अपनी वफा के लिए,
देखते - देखते हो गये, कितने ही मशहूर हम।

□

ग़ज़ल

चाहत में दम तोड़ कर, कोई भी सांस रुकती नहीं,
बैठे करीब शोलों के हैं, दामन को आग लगती नहीं।

बरसों की यह खामोशियां, और सीने में यह तूफां,
राज़े - दिल बता तो दें, ज़ुबां मगर खुलती नहीं।

मौत से बचने को अब, कहां पे सर छुपाएं हम,
कोई भी ऐसा घर कहां, मैयत जहां से उठती नहीं।

वफा को ले गली-गली, अक्सर वो फिरते देखे हैं,
कौन कहता है दुनिया में, मोहब्बत कहीं बिकती नहीं।

लहरों का खौफ़ क्यों रहे, एहसान-ए-नाख़ुदा भी क्यों,
तूफ़ानों का यहां डर किसे, मैं 'साहिल' हूं कश्ती नहीं।

□

ग़ज़ल

तुम हो ज़मीं के चांद, तुम सा कोई कहां होगा,
तुम्हीं से तो हज़ार बार, रौशन यह जहां होगा।

ख़ैर हम न ही सही, जानां तेरी दीद के क़ाबिल,
हम सा भी मगर कोई, तुम पे न मेहरबां होगा।

बहुत ख़्वाब दिखलाते हैं, निगाहों के भी मग़ालते,
यह न सोचो दूर वहां, ज़मीं पे आस्मां होगा।

आज हम हैं तो हमें, इन्तज़ार रहता है तेरा,
बाद हमारे, तेरे लिए, कल कौन परेशां होगा।

हैं वक्त के ताले पड़े, होंठों पे एक मुद्दत से,
खुले गी जब ज़ुबान तो, कोई न हमज़ुबां होगा।

जिस रोज़ सुर्ख़ जोड़े में, यहां से तुम जाओ गी,
उस रोज़ मेरे सबर का, दुनिया में इम्तहां होगा।

लहरों में भंवर का डर, कश्ती में डूब जाने का,
कहां बच के जाइऐ अब, 'साहिल' पे तूफ़ां होगा।

□

ग़ज़ल

मुद्दत से उन की आरज़ू, दिल में हैं छुपाऐ हुए,
ज़माने के सब तूफां जैसे, सीने में हैं दबाऐ हुए ।

ए नज़र उन्हें ढूंढ ले, इसी हजूमे-आम में,
बैठे न हों पर्दा किये, हम से वो शरमाऐ हुए ।

हमें भी एहसास छोड़ता नहीं, अपनी बेवफ़ाइयों का,
हवा भी चली आती है, गिले किसी के उठाऐ हुए ।

यह ढलते साए शाम के, और याद तिलमिलाती हुई,
नाकामियों को बहुत हम, मुंह से हैं लगाऐ हुए ।

छेड़ी जो उन की दास्तां, महफिल में उन्हीं के सामने.
उठ कर न फिर जा सके, दामन को वो बचाऐ हुए ।

□

ग़ज़ल

ग़मों से हम ने दोस्ती, जब भी कभी बढ़ाई है,
कभी हम क़रीब मौत के, कभी मौत चल के ग्राई है।

दो क़दम चल के तुम, राहे-वफ़ा ही भूल गये,
हम ने ही जिन्दगी, तेरी याद में बिताई है।

कहां के यह रिश्ते बने, यही सोच कर उलझे रहे,
चार दिन की उम्र यह, कितने ही दौर लाई है।

तड़पे कभी तेरी याद में, कभी होश गुम होते रहे,
कितनी ही बार जिन्दगी, तेरे क़दमों से उठाई है।

धड़कनों में ग्राज फिर, तूफां सा उठ के रह गया,
ग्राज दिल की कश्ती कहीं, 'साहिल' से जा टकराई है।

□

ग़ज़ल

बैठे हुए सरे-महफ़िल, दिल ने क्या खोली ज़ुबां,
कहते-कहते थक गये, हम आज उनकी दास्तां।

कहां हम ने सोचा था, वक्त यह भी आऐ गा,
इक रोज तेरे इश्क में, हम बनें गे बेज़ुबां।

क्या तुम से कहिऐ गा, और किस से कहिऐ गा,
आज इतने दूर हो तुम, है दूर जितना आस्मां।

अपनी ही जफ़ाओं का, किसी के सर दोष क्या,
तुम्हीं बदले हो सिर्फ़, वक्त बदला है कहां।

तुम से ही हारे हुऐ, क्या लड़ें गे वक्त से,
रुकने लगे हैं रफ्ता-रफ्ता, सांसों के ही कारवां।

□

ग़ज़ल

यह आते जाते हुए लम्हे, कब तक सितम गिराएं गे,
आखिर तो इस हयात का, कहीं पे सिला पाएँ गे।

दुनिया के साथ तुम भी, किए जाओ सितम लाखों,
हम वक्त के गिरते मीनार, क्या खाक़ सर उठाएं गे।

हम को डरा रहे हो, क्यों दुनिया के रास्तों से,
तुम्ही निभा सको गे न, हम उम्र भर निभाएँ गे।

तुम खुदा के फ़ज़ल से, दुनिया में फलो-फूलो,
हम चराग़े-हयात को, इक बार फिर जलाएँ गे।

दम भर ठहरे भी नहीं, हम को तन्हा छोड़ कर,
तेरी यादों के साए यह, जाने कहां तक जाएँ गे।

□

तेरे बगैर जिसे कभी, करार न आए,
तेरी बेरुखी से बच कर, वो कहां जाए।

रहते थे तेरे दिल में, फूल बन के हम,
निकल कर तेरे दिल से, बहुत ज़ख्म खाए।

ज़िन्दगी पे हो गये, भारी ग़म हज़ार,
ज़र्रा सर पे किस तरह, आस्मां उठाए।

तेरी फ़ितरत से हमें, यार क्या लेना,
ज़िन्दगी से खेल कर, तुझे कौन आज़माए।

जलते हम को देख कर, फैलते नहीं यह,
कितने बदल गये, तेरी ज़ुल्फ़ों के साए।

□

ग़ज़ल

बहुत मुश्किल से गुज़री है, दिल यहां लगाने के बाद,
जाने कहां तुम खो गये, चार दिन निभाने के बाद।

कभी आहें, कभी दर्दो-ग़म, कभी तड़पना, कभी आंख नम,
गुज़रती रही इसी तरह, ज़िन्दगी तेरे जाने के बाद।

भूल गये थे रफ्ता-रफ्ता, हम तेरी हर याद को,
फिर कहां तुम मिल गये, आज इक ज़माने के बाद।

उजड़ी हुई मोहब्बत के, मनाते कहां सोग हम,
आस्तां ही कोई न मिला, घर अपना जलाने के बाद।

किस नज़र के हम काबिल 'साहिल' यह न समझेंगे,
हैं वही सदियों के फासले, नज़दीक भी आने के बाद।

□

ग़ज़ल

यादों के आस्तां पे तेरे, ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूं मैं,
अब इस आख़िरी मोड़ से, तुझे पुकार रहा हूं मैं ।

तुम न आए, न मिले, कितना वक्त गुज़र गया,
जाने इस चाहत से क्यों, शर्मसार रहा हूं मैं ।

तड़प - तड़प कर इस तरह, हर रोज़ तेरी याद में,
जन्म - जन्म का तेरा कोई, कर्ज़ उतार रहा हूं मैं ।

इक वहम है तुझे कभी, हो जाए आरज़ू मेरी,
इसी उम्मीद पे यहां, दिन गुज़ार रहा हूं मैं ।

□

ग़ज़ल

तुम्हें चाहने के बाद ग़ैर ही पाया है,
यह कहां आंधियों में चराग़ जलाया है।

सभी देखते हैं मेरे घर की तरफ़,
मेरी दीवार पे किस का साया है।

तेरे ग़मों से यूं दबे हैं जैसे,
हमीं ने सर पे आस्मां उठाया है।

उन के पांव में पाजेब की झन्कार,
कौन जन्नत के साज़ उठा लाया है।

नज़र हटती नहीं, लब खुलते नहीं,
मैं हैरां हूं यह कौन आया है।

सीने में उठें गे अभी और वलवले,
तेरी मेहरबानियों का अंजाम बकाया है।

□

ग़ज़ल

नाकामियों की चादर में, यह चाहत अब छुपानी है,
मोहब्बत किस के आगे रोए, किस को शर्म आनी है।

लिपटते हैं ख़ार दामन से, फूल हाथ छुड़ाते हैं,
कितनी अजीबो - ग़रीब सी, हमारी यह ज़िन्दगानी है।

इतिहास के सफ़ों पे तुम, कुछ मेरे भी हर्फ़ लिखना,
तुम्हारी तरह दुनिया भी, कल को बदल जानी है।

मैं सुखनवर क्या होता, क्या था मुझे इल्म भी,
आज अगर शायर हूं मैं, यह तुम्हारी मेहरबानी है।

न थकें गी निगाहें मेरी, न तुम कभी आओ गे,
हां, लम्हा-लम्हा इसी तरह, ज़िन्दगी गुज़र जानी है।

□

ग़ज़ल

आईना - ए - दिल के सामने, कैसे उन को संवारिएं,
चांद ज़मीं पे किस तरह, फ़लक से अब उतारिएं।

इक तरफ बोझ यादों का, इक तरफ यह तेरी आरज़ू,
हैं दोनों से परेशान हम, कहां जा के वक्त गुज़ारिएं।

माज़ी की उन राहों से, कौन चल के आएे गा,
यादों के इस जंगल में, किस को कहां पुकारिएं।

पांव ज़मीं पहचानते नहीं, निगाहों में सभी ग़ैर हैं,
इतने बड़े जहां में भी, है फ़िक्र कहां पे ठहरिएं।

□

ग़ज़ल

लाया हूं दिले - नाशाद को, तेरे ग़म से आज संवार कर,
बेरुख़ी तेरी फितरत सही, इक लम्हा तो इसे प्यार कर।

माना कि तेरी बज्म में, आया हूं अपने ही जोर से,
ऐसे, मगर सरे - महफ़िल, मुझ को न शर्मसार कर।

रात के दामन पे यह, किसी की नींद के ख़ुमार,
रात भर जागा कोई, बाज़ी - ए - इश्क़ हार कर।

किस की हसरतों पे वो, चुपके से आज रो दिऐ,
कौन जहां से उठ गया, थोड़ी सी ही गुजार कर।

मैं शाम हूं, तू सहर, मैं सहरा हूं, तू शहर,
न पहुंचे गा तुझ तलक, तू मेरा न इन्तजार कर।

□

कव्वाली

शेर (लड़का)	वल्लाह वो ग़रूर निगाहों का, देखें तो रूह थरथराती है।
आप आ रहे हैं जैसे, कोई कयामत चली आती है।

लड़के
महफ़िल में आप आ ही गये, जाइए तो देख लेंगे,
दामन को थाम लिया है, छुड़ाइए तो देख लेंगे।

लड़कियां
जाओ दावा न करो, शोलों से कौन खेलता है,
अपने ही नंगे पांव से, खारों पे कौन चलता है।
हम चले जाएं गे, दामन छुड़ा जाएं गे,
तुम न रोक पाओ गे, कहते ही रह जाओ गे।
महफ़िल में आप आ ही गये, जाइए तो देख लेंगे॥

लड़के
आप ने सुना न कभी, हम हैं क्या चीज यहां,
क़ज़ा भी खौफ़ खाती है, चल के हम जाएं जहां।
आंख नम हो जाए गी, ज़ुल्फ खम हो जाए गी,
हम से देखे ही नहीं, या कहिए ढूंढे ही नहीं।
वो निगाहें शोला ही सही, मिलाइए तो देख लेंगे,
महफ़िल में आप आ ही गये, जाइए तो देख लेंगे॥

लड़कियां
हम तूफां, हम ही शोला, तुम ने यह सुना होगा,
हमारे दर से उठता हुआ, जनाजा-ए-इश्क देखा होगा।

हम से जहान डरते हैं, हम को ख़ुदा भी कहते हैं.
तुम हो क्या चीज़ भला, कर लो ख़ुद ही फ़ैसला।
हमारे पांव के निशां ही, पाइऐ तो देख लेंगे
यूं ही न कहना अब हमें, जाइए तो देख लेंगे ।।

लड़के हम जिगर वाले हैं वो, जल्वों को बांध लेते हैं,
तुम पे ही फ़िदा हैं अजी, मुंह पे कह देते हैं।
क्या जले गी शमा वहां, नहीं हम से परवाने जहां,
हम से वो शर्मो - हया, हम नहीं तो आप हैं क्या।
कौन पूछे गा उन्हें, वो ज़ुल्फो-रुखसार हैं क्या,
हम ने चांद-तारों तलक जन्नत के उन नज़्ज़ारों तलक।
अजी आप को सराहा है, देखिऐ तो कितना चाहा है,
फिर भी आप ग़ैरों से, निभाऐ तो देख लेंगे।
महफिल में आप आ ही गये, जाइऐ तो देख लेंगे ।।

लड़की माना कि तुम हो परवाने, दिखाओ मर के तो जानें,
यह बड़ी बात है यार, कोई होगा न तैयार।

लड़का वो निगाहें हैं जो खंजर, उठा के देख लो मन्ज़र,
हम भी कोई जीते हैं, ज़ख़्म दिल के सीते हैं।

लड़की चलो तुम मान तो गये, ख़ुद को पहचान तो गये,
ज़िन्दगी देते हैं हम, ज़िन्दगी लेते हैं हम।

लड़का किसी पे मेहरबां हैं अगर, किसी का चीर डालें जिगर,
क्या भला चीज़ हैं आप, फिर भी अज़ीज़ हैं आप।

लड़की	हम से दुनिया के नजारे, हम से ही चांद सितारे,
हम नहीं तो क्या है जहां, हम से ही वक्त रवां।

लड़का	फिर आप को जो खोऐं गे, उम्र भर ही रोऐं गे,
दामन से लिपटने दो जरा, आंचल में सिमटने दो जरा।
गेसुओं के साए में अब, यह उम्र गुजर जाए अब,
आंखों के जाम पीते रहें, मुस्करा के हम भी जीते रहें।
हम से दीवानों के भी, दामन को छोड़ते तो नहीं,
इस तरह जो मरता हो, दिल उस का तोड़ते तो नहीं।
हम पे जमी निगाह को, हटाइऐ तो देख लेंगे,
ऐसे में हम को छोड़ कर, जाइऐ तो देख लेंगे।

लड़की	चलो हम तुम पे हुए, मेहरबां सनम पे हुए,
यह हुस्न जो हमारा है, चलो आज से तुम्हारा है।
ज़ुल्फों से खेल सकते हो, क्यों दूर से ही तकते हो,
हम ज़ुबां वाले भी हैं, हम निभाने वाले भी हैं।
हम से ही उम्र भर, निभाइऐ तो देख लेंगे,
वरना कभी न कहिए गा, जाइऐ तो देख लेंगे॥

लड़के	महफिल में आप आ ही गये, जाइऐ तो देख लेंगे।

लड़कियां	हम से ही उम्र भर, निभाइऐ तो देख लेंगे।

□

क़त्आत

अपनी मजबूरियों की क़सम न उठाया करो,
मजबूरियां मोहब्बत पे ग़ालिब हो नहीं सकतीं।
मुझसे न करो यह फ़ज़ूल की बातें,
चिंगारियां राख के ढेर में सो नहीं सकतीं।

○

मुझे अपनी शिकस्त का कोई ग़म नहीं,
तुझे अपनी मर्ज़ी का हमराज़ तो मिला।
ज़िन्दगी चन्द हसरतों का इक ग़ुबार है,
कोई खो जाए तो किस से क्या गिला।

○

जवानी ढल जाए गी जब ग़ैर बाहों में तुम्हारी,
मेरी इस चाहत को तब सराहा करो गी तुम।
आज तुम्हें फुरसत न सही करने को गुफ्तगू मगर,
इसी बात के लिए कभी कराहा करो गी तुम।

○

निगाहें मिला कर न मुस्कराइऐ गा कभी,
निगाहें झुका कर न शरमाइऐ गा कभी।
लाख क़यामतें ले कर आप आए हैं यहां,
क़दमों पे आस्मां न झुकाइऐ गा कभी।

○

इन दहकते हुए रुख़सारों को छू तो लेने दो,
यह मेरे हाथ इसी बात को तरसते हैं।
मैं भी इन तमन्नाओं को ले कर जाऊं कहां,
तुम्हें ही देख कर तो अरमान मचलते हैं।

○

तुम मेरे पहलू में समझ लो जो घर अपना,
मैं ज़िन्दगी के हसीं महल यहीं बना डालूं।
तुम्हारे ही बग़ैर है फ़र्क़ दुनिया और ख़ुदाई में,
तुम मिल जाओ तो यह फ़र्क़ भी मिटा डालूं।

○

वो गैसू खोल कर फिर क़रीब आओ तुम,
यह जज़बात सिमटने को पनाह मांगते हैं।
उन रुख़सारों से खेलने दो इन निगाहों को,
तुम्हें क्या ख़बर, हम तुम्हें क्या मानते हैं।

○

जहां तुम्हारे क़दमों के निशां तक नहीं मिलते,
जिन्दगी सर झुकाए वहां से गुजर जाती है।
कौन खुश है तुम्हें चाह कर, मत पूछो,
किस को चाहा था, आज शर्म आती है।

○

मुझे मिल कर न मुझ पे एहसान कर,
मेरे साथ तेरी याद का सहारा काफी है।
इस से भी हो जाऊं गा महरूम जिस रोज़,
उस रोज़ ज़िन्दगी को मौत का इशारा काफी है।

○

शाम की इन्हीं तन्हाइयों में कहीं खो कर,
इक रोज़ अपना निशां ही मिटा जाऊं गा।
रुसवाइयों के डर से कदम रोकने वाली,
ज़माने में तेरी आबरू और बढ़ा जाऊं गा।

○

चलो अब भूल जाएं इस नाकाम मोहब्बत की बातें,
न तुम्हें हो शिकायत न मुझे गिला तुम से।
तुम भी हो अमानत किसी ग़ैर की अब,
मुझे भी मिलना है क्या सिला तुम से।

○

शेर

कहां गिरी है रात भर शबनम फ़लक से, छोड़िऐ,
जाने शबे-फ़ुर्कत में कौन, अश्कों की नजर हो गया।

○

जिस शाने पे तुम कभी, रख लिया करते थे सर,
उसी शाने से आज देखो, मोहब्बत लग के रोती है।

○

हस कर किसी के बनिऐ, फिर तड़प-तड़प के मरिऐ,
सिला यही जमाने में रह गया है दिल्लगी का ?

○

हमारे दामन तलक भी कोई, पहुंच नहीं सकता,
जो साहिल को तोड़ डाले, वो कश्ती नहीं देखी।

○

फिर तुझ सा कोई, निगाहों ने आज देखा कहीं,
फिर छुपा के चेहरा, रोए हैं तेरी याद में।

○

कायनात सिमटी हुई है, आप के तब्बसुम में,
आप जिसे मुबारक़, क्यों न वो ख़ुदा होगा।

○

वफ़ा न जो कर सको, आहिस्ता-आहिस्ता भुला देना,
हम रफ्ता-रफ्ता इसी तरह, दिल से निकल जाएँ गे।

○

इसी शक्ल में फिर कभी, ज़मीं पे नहीं आना है,
कौन किसे पहचाने गा, गो कहीं मिल जाएँ गे।

○

तुम भी न चुराओ नज़र, हम भी न करें शिकवा,
चलो यही समझें कि आज, पहली ही मुलाकात है।

○

तुम दिल के ग़रीब थे, मेरी चाहत क़र्ज़ बन गई,
जाने किस जन्म में अब, चुके गा हिसाब-ए-ज़िन्दगी।

○

यूं ही बस शामो - सहर, इक ख़्वाब देखते हैं वरना,
हम तेरे ठुकराए हुए, क्या पाएँ गे तेरे करम।

○

हम पे हैं कितने सितम, न हम से अब पूछिऐ,
यादों का बोझ उठाऐ हुए, हर शबे-हयात ढलती है।

○

बिजलियों से डर के अब, कहां चले जाएँ हम,
कौन सी ज़मीं है वो, जहां पे आस्मां नहीं।

○

कल ज़माना मेरे मज़ार को, पूजे भी गर तो क्या,
मेरे हिस्से में आज तो, सहरा-ओ-गुब्बार हैं।

○

यूं तो गुज़रा है यहां, इक दौर तेरे साथ मगर,
दामन भी न छू सके, इतने बड़े अर्से में हम।

○

ज़िन्दगी के इस मोड़ पे, हैं सब ही नये आशना,
ख़ाक किस कूचे की थे, बिखरे किस कूचे में हम।

○

सर पे बोझ यादों का, पांव में गुरबत की बेड़ियां,
हम भी कोई जीते हैं, ज़िन्दगी कुछ और होती है।

⊙

जब तेरे चेहरे से कभी, उठाए कोई घुंघट तेरा,
गुज़रे हुए इक दौर को, उस वक्त याद कर लेना।

⊙

मयख़ाने में भी क़िस्मत हमारी देखिए,
ख़ाली सागरों से ही खेलते रहे।

○

कितने जिस्म बदलती है इक रूह, जब,
इन्तज़ार सदियों का वक्त लेता है।

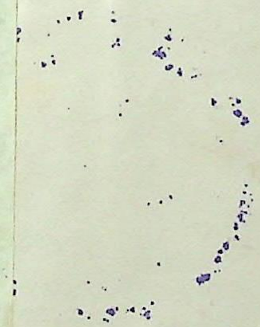
○

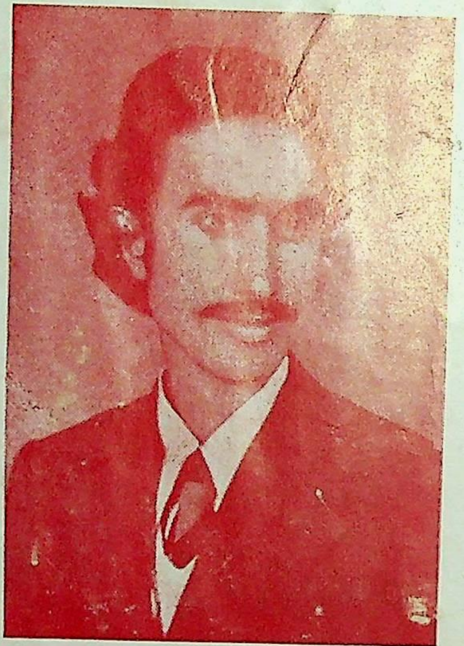
आ कर हमारे सामने, सर न झुका लिया करो,
हम वो नहीं जो तुम्हें, वो वक्त याद दिलाएँ गे।

⊙

चिता से उठ रहे थे शोले, और आस्मां से,
रूह देख रही थी अपना, पैरहन जलता हुआ।

⊙





शाम 'साहिल'
क्वार्टर नं० 90
रेशम घर कालोनी, जम्मू।

मुरादों के जज़ीरों में

शाम 'साहिल' उस मुमताज़ शायरा के शागिर्द हैं जिस के पांव मेरे साथ चलते - चलते फिसल गये। और शाम 'साहिल' का यह 'नज़राना' उस अक़ीदत का लतीफ़ तर अक्स है जो उसे अपनी गुरु मां से मिला है।

मुझे यकीन है कि 'साहिल' की कुव्वते - परवाज़ उसे औज-ए-सुरैया तक पहुंचा कर रहे गी और उस का ख़लूस उसे मक़बूलियत बख़शता रहे गा।

विजय स
पक्का डन्गा,